SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आशीर्वाद

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु – 560 001

वार्षिक हिंदी पत्रिका
2023
अंक - 36

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु - 560 001

"आशीर्वाद"

वार्षिक हिंदी पत्रिका - 2023
अंक - 36

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री विमलेंद्र आनंद पटवर्धन, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

श्रीमती शांति प्रिया एस., प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

श्रीमती दीपना गोकुलराम, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

प्रकाशन_परामर्शदात्री समिति

अध्यक्ष

श्री सुब्बैय्या, उप महालेखाकार (प्रशासन/लेखापरीक्षा-II)

सदस्य

श्रीमती रमा एम., वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष/बिल्स/ले.प.-II)

संपादक मंडल

संपादक

सुश्री अदितिका, हिंदी अधिकारी (लेखापरीक्षा-II)

प्रूफरीडिंग एवं टंकण

सुश्री नूपुर कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक (लेखापरीक्षा-II)

श्री शिव शंकर, कनिष्ठ अनुवादक (लेखापरीक्षा-II)

विशेष आभार

ई. डी. पी. अनुभाग (लेखापरीक्षा-II) के सदस्य,

सहयोग

राजभाषा परिवार के सदस्यगण

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं तथा संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है| रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं |

संदेश

यह अत्यधिक हर्ष की बात है कि हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 36वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के अलावा 'आशीर्वाद' हमारे सहकर्मियों की साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। दैनिक कार्यालयी कार्यों में राजभाषा हिंदी के अनुप्रयोग के लिए प्रेरित करने वाली पत्रिका के सुरुचिपूर्ण व लगातार प्रकाशन के लिए मैं आशीर्वाद के संपादक मंडल को साधुवाद देता हूँ।

इस अंक के लिए कलम चलाने वाले सभी लेखकों के प्रति, मैं हृदय से आभार व्यक्त कर उन्हें बधाई देता हूँ। इस अंक के माध्यम से आपको अपने सहकर्मियों की प्रतिभा से अवगत होने का अवसर मिलेगा, साथ ही उनकी रचनाएँ आपको लिखने के लिए प्रेरित करेंगी। मुझे आशा है कि आगामी वर्षों में भी यह पत्रिका ज्ञानवर्धक कृतियों सहित निर्बाध रूप से प्रकाशित होती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

विमलेंद्र आनंद पटवर्धन
प्रधान महालेखाकार (ले.प.-II)
कर्नाटक, बेंगलूरु

संदेश

हमारे कार्यालय की संयुक्त पत्रिका 'आशीर्वाद' के 36वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। वास्तव में कार्यालयीन पत्रिका कार्यालय कर्मियों की रचनाधर्मिता का प्रतिबिंब होती है। जिसमें उनके भावों-विचारों आदि का प्रकटीकरण होता है। भाषा विचारों का एक सशक्त माध्यम है और भाषा के द्वारा ही व्यक्ति की पहचान उसके आचार-विचार, व्यवहार प्रदर्शित होते हैं। संविधान में राजभाषा के महत्व को देखते हुये केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन सुचारु रूप से चलते रहना चाहिए। मुझे आशा है कि हमारे कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'आशीर्वाद' इसी प्रकार निरंतर प्रकाशित होती रहेगी। अंत में सभी रचनाकारों, संपादक सदस्यों आदि को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ.....

शांति प्रिया एस

प्रधान महालेखाकर (लेखापरीक्षा-I)

कर्नाटक, बेंगलूरु

संदेश

हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 36वें अंक के प्रकाशन के इस अवसर पर मेरे मन में अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति हो रही है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने एवं कार्मिकों को हिंदी की ओर अधिक उन्मुख करने में गृह पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। कल्पनाशील और सृजनशक्ति-संपन्न कार्मिकों के लिए कार्यालयीन पत्रिका का प्रकाशन उनके सृजनात्मक कौशल के प्रकटीकरण का उत्तम साधन है। कार्मिकों के बीच राजभाषा हिंदी के वर्धित प्रचार-प्रसार में 'आशीर्वाद' के पूर्ववर्ती अंकों ने अतुल्य कार्य किया है। मैं आशा करती हूँ कि उस कड़ी को अग्रसर करते हुए पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हिंदी को अधिक लोगों तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएगा।

मैं उन सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ जिन्होंने अपनी बहुमूल्य रचनाओं से इस अंक को समृद्ध व अलंकृत किया है। संपादक मंडल के सदस्य एवं राजभाषा संवर्ग के समस्त कर्मी भी निस्संदेह बधाई के पात्र हैं। मेरी कामना है कि अगले वर्षों में भी 'आशीर्वाद' पत्रिका का प्रकाशन निर्विघ्न रूप से होता रहे।

शुभकामनाओं के साथ,

दीपना गोकुलराम
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
कर्नाटक, बेंगलूरु

संदेश

हमारी हिंदी पत्रिका आशीर्वाद के 36वें अंक का सफल प्रकाशन मेरे लिए हर्ष का विषय है। मैं कार्यालय के उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को शुभकामनाएं देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के माध्यम से अपनी रचनात्मक शैली से हमें परिचित करवाया है। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को भी बधाई देता हूँ।

आशीर्वाद पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है तथा मेरी यही कामना है कि यह कारवां नई ऊंचाइयों को छूते हुए आगे बढ़ता रहे।शुभकामनाओं के साथ,

शुभकामनाओं सहित,

सुब्बैय्या

उप महालेखाकार/प्रशासन (ले.प.-II)

संपादकीय

सुधी पाठकगण,

मेरे लिए यह बहुत ही गर्व एवं सौभाग्य की बात है कि मुझे आशीर्वाद पत्रिका के नए अंक का संपादकीय लिखने का मौका मिला। यह पत्रिका राजभाषा की अभिवृद्धि और सचेतन की प्रस्तावना है। मैं पत्रिका के माध्यम से सभी उच्चाधिकारियों का, कार्यालय में तैनात राजभाषा कर्मियों का तथा कार्यालयों में पदस्थ उन सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं और अविरल सहयोग के जरिए पत्रिका के कलेवर को सुंदर एवं पठनीय बनाया। उनके साथ और सतत योगदान के बिना इतनी जल्दी यह अंक आप सभी के सामने लाना बिल्कुल भी संभव नहीं था।

इस अंक में हमने विविधता से भरी और रोचक सामग्री का समावेश किया है, जिससे यह अत्यंत रुचिपूर्ण एवं उपयोगी बन गया है। पूर्व की भांति, इस अंक में भी कार्यालय सदस्यों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। पत्रिका के इस अंक में आलेख, कहानी, लघु कथा, कविता एवं अन्य विधाओं के रचनाओं को शामिल किया गया है। इस वार्षिक पत्रिका में हमने आपके लिए साल की उपलब्धियों का विवरण भी प्रस्तुत किया है। साथ ही तीनों कार्यालयों की विभिन्न गतिविधियों को भी छायाचित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।

हमें यह उम्मीद ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आपको यह संचय बहुत पसंद आएगा तथा मार्गदर्शन, सहयोग और समर्थन की यह श्रृंखला आगे भी जारी रहेगी। राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति आप सभी का यह समर्पण एक उज्ज्वल भविष्य की ओर इशारा कर रहा है।

पाठकों के अमूल्य सुझावों व सकारात्मक मार्गदर्शन की प्रतीक्षा में.....

अदितिका

हिंदी अधिकारी

सत्यमेव जयते

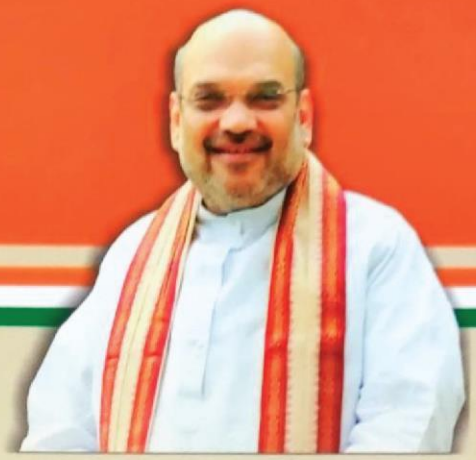

हिंदी दिवस 2022

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

75

आज़ादी का अमृत महोत्सव

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन का शुभारंभ करते माननीय गृह मंत्री

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन में हिंदी शब्द सिंधु का लोकार्पण

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन की कुछ झलकियाँ

अनुक्रमणिका

क्रम सं	शीर्षक	रचनाकार/(श्री/सुश्री)	विधा	पृष्ठ
1	माँ की ममता	अनूप कुमार	लेख	16
2	विज्ञान से परे एक शहर	आरती प्रियदर्शिनी	लेख	19
3	जांबाज जवान की ज़ुबान से	अर्चना प्रजापति	कविता	22
4	आत्मकथाओं की भाषा	वंदना एस.	लेख	23
5	प्रेरणादायी 'दिनकर'	मयंक कुमार 'मयंक'	लेख	26
6	हे! बूँद	अर्चना	कविता	29
7	एक मध्यवर्गीय- कामकाजी महिला की व्यथा	आरती प्रियदर्शिनी	लेख	30
8	दूसरा सुनील	ओम कुमार अड़लक	लेख	33
9	मेरी प्यारी बेटी	दीपक कुमार सिंह	कविता	39
10	पानी का महत्व	प्रसाद पी जोशी	लेख	40
11	ग़ज़लों की कहन	मयंक कुमार 'मयंक'	लेख	42
12	चलो	संजीव चंद्र पाठक	कविता	45
13	भारत की विदेश नीति	साधना सिंह	लेख	46
14	जीवन की सच्चाई	पंकज कुमार	कविता	47
15	बीज से सीख	शिव शंकर	लेख	49
16	क्या दुनिया जीने लायक है?	यश शर्मा	कविता	52
17	वर्तमान जीवन शैली एवं योग	गीता तेवतिया	लेख	53
18	प्रकृति और हम	नेहा कुमारी कर्ण	कविता	55
19	आघात	विजय कुमार	लेख	56
20	स्वयं पर विश्वास	संजीव चंद्र पाठक	कविता	57
21	भागीरथी: जीवनदायिनी, पापनाशिनी	आद्या (पुत्री पंकज कुमार)	लेख	58
22	आलस	मुकेश अंबानी	कविता	60
23	अपेक्षा	अमरेन्द्र कुमार चौधरी	लेख	61
24	राष्ट्रीय सेवा योजना	शिव शंकर	लेख	63
25	पिता	मुकेश अंबानी	कविता	66

श्री अनूप कुमार, लेखापरीक्षक

माँ की ममता

भाई मरे बल घटे, बाप मरे छत जाए।
जिस दिन मरेगी मावड़ी, सारा जग सूना कर जाए।।

हृदय को भेदने वाली ये पंक्तियाँ इस धरती पर माँ के दर्जे को बखूबी बयां कर रही हैं। 'माँ' शब्द लिखने व बोलने में तो ज़रा सा लगता है, लेकिन उसका अस्तित्व व उसका व्यक्तित्व समुद्र से भी ज़्यादा गहरा है, जिसे समझने के लिए कितने भी गोते लगाए जाएँ कम पड़ जाएँगे। माँ भगवान द्वारा भेजा गया फरिश्ता है। वह हमारी पहली शिक्षक है, दोस्त है, मार्गदर्शक है। माँ धूप में ठंडी छाँव है तो सर्दी में गुनगुनी धूप है। वह हमारे होने का एहसास है। एक माँ ही है जो अपने बच्चों की जिंदगी में खुशियाँ भरने के लिए खुद को बुझा लेती है। वह अपनी इच्छाओं, सपनों व खुशियों को त्यागकर अपने बच्चे के लिए सपने बुनती है। ऐसे में बच्चों का भी फर्ज़ है कि अपनी माँ को खास होने का एहसास करवाएँ और इसके लिए उन्हें किसी खास दिन के आने का इंतज़ार किए बगैर हर दिन को खास बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

लेकिन आजकल की व्यस्तता भरी ज़िंदगी में बच्चों के पास अपनी माँ के निकट बैठकर दो बातें करने तक का वक्त नहीं है, या यूँ कहें कि वो अपनी माँ को इतने हल्के में लेते हैं कि उन्हें कभी ये महसूस ही नहीं होता कि साल के 365 दिन, बिना कोई छुट्टी लिए घर से बाहर तक की, सभी ज़िम्मेदारियों की गठरी सिर पर उठाए रखने वाली माँ को भी वक्त देना ज़रूरी है। हम पढ़ाई या अपने ऑफिस के काम में कितने भी व्यस्त क्यों न हों, दिन का थोड़ा-बहुत समय अपने दोस्तों से गपशप करने या फोन चलाने के लिए तो निकाल ही लेते हैं; लेकिन जब बात माँ की होती है तो हम वक्त न होने का हवाला देकर अपनेआप को बचाने का प्रयास करतेहैं।

हम ये भूल जाते हैं कि आखिरी साँस तक हमारे साथ-साथ परछाई बनकर चलने वाली, बिना कुछ कहे हमारे मनोभावों को समझने वाली माँ के प्रति हमारी भी तो ज़िम्मेदारी बनती है कि उसकी खुशियों का ध्यान रखें; उसके सपनों के बारे में जानें; उसे क्या करना पसंद है उससे पूछें। अपनी माँ के साथ थोड़ा नहीं, बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा समय व्यतीत करें। हम जिस तरह

से 'मदर्स डे' के अवसर पर अपनी माँ के साथ सोशल मीडिया पर फोटो शेयर करते हैं; उनके लिए उपहार लाते हैं; वैसे अन्य दिनों में भी उनके साथ रहें, तो कितना अच्छा हो। हमें तो ईश्वर का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उन्होंने हमारे लिए अपने साये के रूप में माँ भेजी, जो हमारी सारी बलाएँ अपने ऊपर ले लेती है; बच्चे पर आँच आए तो सीधी और सरल दिखने वाली माँ चंडी बन जाती है। माँ के न रहने पर पूरा घर अकेला हो जाता है। माँ वो हस्ती है, जिसका इस संसार में कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

हम दुनिया में हम चाहे कितने भी रिश्तों से क्यों न बँधे हुए हों, लेकिन माँ के बिना हमारा जीवन अधूरा होता है। हर रिश्ते को हमसे कुछ पाने की लालसा रहती है लेकिन माँ और बच्चे का संबंध ऐसा होता है, जहाँ माँ बिना कुछ वापस पाने की उम्मीद के अपनी संतान को जीवनपर्यन्त सिर्फ देना जानती है। बच्चे की सफलता के पीछे भी माँ का संघर्ष एवं समझ होती है। यहाँ पर महान वैज्ञानिक एडिसन के बचपन का एक किस्सा याद आ रहा है।

एक दिन थॉमस अल्वा एडिसन स्कूल से अपने घर आया और स्कूल से मिले हुए हुए पत्र को अपनी माँ से देते हुए बोला की “माँ मेरे शिक्षक ने मुझे यह पत्र दिया है और कहा है कि इसे केवल अपनी माँ को ही देना। माँ बताओ आखिर इसमें ऐसा क्या लिखा है, मुझे जानने की बड़ी उत्सुकता है”। तब पेपर को पढ़ते हुए माँ की आँखें रुक गईं और वह तेज आवाज़ में पत्र पढ़ते हुए बोली “आपका बेटा बहुत ही प्रतिभाशाली है यह विद्यालय उसकी प्रतिभा के आगे बहुत छोटा है और उसे और बेहतर शिक्षा देने के लिए हमारे पास इतने काबिल शिक्षक नहीं हैं, इसलिए आप उसे खुद पढ़ाएं या हमारे स्कूल से भी अच्छे स्कूल में पढ़ने को भेजें”। ये सब सुनने के बाद एडिसन अपने आप पर गर्व करने लगा और माँ की देखरेख में अपनी पढाई करने लगा।

कई साल बीत गए, एडिसन पढ़-लिखकर एक महान वैज्ञानिक बन चुके थे। उनकी माँ उन्हें छोड़कर दुनिया से जा चुकी थीं। तभी एक दिन घर में कुछ पुरानी यादों को तलाशते उन्हें अपनी माँ की अलमारी से वही पत्र मिला जो उनकी अध्यापिका ने दिया था। उसमें लिखा था कि, “आपका बेटा मानसिक रूप से बीमार है जिससे उसकी आगे की पढाई इस विद्यालय में नहीं हो सकती है इसलिए उसे अब विद्यालय से निकाला जा रहा है”। एडिसन उस पत्र को पढ़कर भावुक हो गए और अपनी डायरी में लिखा कि, “थॉमस एडिसन तो एक मानसिक रूप से बीमार बच्चा था लेकिन उसकी माँ ने अपने बेटे को सदी का सबसे प्रतिभाशाली व्यक्ति बना दिया”।

ऐसे ही अनगिनत किस्से हैं जिसमें माँ ने अपने बच्चों को उस मुकाम तक पहुँचाया, जिस तक वो अकेले कभी भी नहीं पहुँच सकते थे। माँ बूढ़ी हो जाने पर भी अपने बच्चे की ढाल बनकर

खड़ी रहती है। ऐसे में ज़रा सोचकर देखिए कि क्या साल भर में एक दिन 'मदर्स डे' मनाकर हम अपनी माँ के कर्ज़ को चुका सकते हैं। जवाब पाएँगे "नहीं", हम पूरी ज़िंदगी भी लगा दें तो अपनी माँ के कर्ज़ को नहीं चुका सकते हैं। लेकिन उसने आज तक हमारे लिए जो कुछ भी किया है; उसके लिए उन्हें ''धन्यवाद'' तो बोल ही सकते हैं। हमेशा याद रखना मुश्किलें कितनी भी बड़ी हों, अगर आपकी माँ आपके साथ है तो हर मुश्किल आसानी से पार हो जाएगी।

श्रीमती आरती प्रियदर्शिनी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

विज्ञान से परे एक शहर- जगन्नाथ पुरी

भारत के पूर्वी तट पर उड़ीसा राज्य मे स्थित है एक सुंदर सा शहर-पुरी। इसी को हम सामान्यता जगन्नाथ पुरी के नाम से जानते है। यह स्थान मूल रूप से भगवान विष्णु के स्वरूप जगन्नाथ को समर्पित है। अवंती के राजा इंद्रद्युम्न ने पुरी में जगन्नाथ का मुख्य मंदिर बनवाया था। वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण दसवीं शताब्दी के बाद किया गया था ।

पुरी भारत के प्रमुख तीर्थ स्थानों में एक, चार धाम का एक हिस्सा है। पुरी की रथ यात्रा पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। रथ यात्रा एक वार्षिक यात्रा है जिसमें देवताओं को रथों के दो सेट (प्रत्येक में तीन) पर मंदिर के बाहर ले जाया जाता है। पहला रथ देवताओं को नदी तक ले जाता है जो जगन्नाथ मंदिर और गुढिचा मंदिर को अलग करती है। उसके बाद, मूर्तियों को नदी पार करने के लिए तीन नावों में चढ़ाया जाता है। यहां से दूसरा रथ देवताओं को नदी से गुढिचा मंदिर तक ले जाता है जहाँ अनुष्ठान होता है।

यह स्थान तीर्थ के अतिरिक्त एक सुंदर पर्यटक स्थल भी है। किवदंतियों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि भगवान विष्णु इस स्थान पर विश्राम करते है। इस कारण आज भी जगन्नाथ मंदिर मे समय-समय पर भगवान को भोग खिलाकर विश्राम करवाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि आज भी भगवान यहां निवास करते है। इस मान्यता के पीछे कई चौंका देने वाले कारण हैं। कहा जाता है कि अगर भगवान जगन्नाथ की मूर्ति में कान लगाकर सुने तो दिल के धडकने की आवाज सुनाई देती है। अगर इस बात पर विश्वास करना असम्भव भी हो तब भी यहां कई ऐसी घटनाएं होती हैं जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। ये अग्रलिखित हैं :

- ध्वजा का हवा के विपरीत दिशा में उड़ना : इस तथ्य को हर कोई जानता है कि कपड़े का कोई भी टुकड़ा हवा द्वारा अपने मार्ग के अनुसार उड़ने के लिए बाध्य होता है। लेकिन जगन्नाथ मंदिर के शिखर पर लगा झंडा इस सिद्धांत का एक अनोखा अपवाद है। यह विशेष ध्वज बिना किसी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के हवा की दिशा के विपरीत दिशा में बहता है।

- समुद्र की हवा का विचित्र व्यवहार: पृथ्वी पर कोई भी स्थान ले लीजिए, दिन के समय समुद्र से हवा जमीन पर आती है और शाम को इसके विपरीत होता है। लेकिन, पुरी में हवा

की प्रवृत्ति विरोधाभासी होने और बिल्कुल विपरीत दिशा चुनने की होती है। दिन के समय हवा ज़मीन से समुद्र की ओर चलती है और शाम को इसके विपरीत होता है।

• प्रतिदिन ध्वजा का बदलना: मंदिर के गुंबद के ऊपर लगे झंडे को बदलने के लिए हर दिन एक पुजारी 45 मंजिला इमारत के बराबर ऊंचाई वाली मंदिर की दीवारों पर चढता है। यह अनुष्ठान उस समय से चला आ रहा है जब मंदिर का निर्माण हुआ था। यह अभ्यास बिना किसी सुरक्षात्मक उपकरण के नंगे हाथों से किया जाता है। यह अपने आप में एक चमत्कार है।

• मंदिर की छाया : प्रकाश के विपरीत होने पर किसी भी वस्तु की छाया का बनना एक सामान्य घटना है। परंतु, दिन के किसी भी समय, किसी भी दिशा से मंदिर के गुम्बद की कोई छाया नहीं पड़ती।

• नील चक्र : मंदिर के शिखर पर नील चक्र काफी रहस्यमयी है। इसकी दो विशेषताएं हैं। पहली यह है कि कैसे लगभग एक टन वजनी कठोर धातु, बिना किसी मशीनरी के, केवल उस शताब्दी की मानव शक्ति के साथ वहां पहुंच गई। दूसरा,चक्र से संबंधित वास्तुशिल्प तकनीक से संबंधित है। इसे जिस भी दिशा से देखा जाये, वह सामने की ओर ही दिखाई देता है।

• उड़ान रहित आकाश: आकाश पक्षी क्षेत्र है। हम पक्षियों को हर समय अपने सिर और छतों के ऊपर बैठे, आराम करते और उड़ते हुए देखते हैं। लेकिन, यह विशेष क्षेत्र प्रतिबंधित है, मंदिर के गुंबद के ऊपर एक भी पक्षी को उडते हुए नहीं देखा जा सकता है। यहां तक कि कोई हवाई जहाज भी मंदिर के ऊपर नहीं देखा जा सकता है।

• ध्वनि शून्यता: सिंहद्वार प्रवेश द्वार से मंदिर के अंदर पहला कदम रखने के बाद, समुद्र की लहरों की श्रव्यता पूरी तरह से खत्म हो जाती है। यह घटना शाम के समय अधिक प्रमुख है। फिर, कोई भी वैज्ञानिक व्याख्या इस तथ्य को सामने नहीं लाती। मंदिर से बाहर निकलते ही ध्वनि वापस आ जाती है।

• प्रसादम: मंदिर में आने वाले लोगों की कुल संख्या प्रतिदिन 2,000 से 2,00,000 लोगों के बीच होती है। चमत्कारिक रूप से, हर दिन तैयार किया गया प्रसादम कभी भी बर्बाद नहीं होता है, यहां तक कि इसका एक टुकड़ा भी बर्बाद नहीं होता है न ही यह कभी कम पड़ता है। क्या यह एक प्रभावी प्रबंधन है या सच में प्रभु की इच्छा हो सकती है? प्रसाद को पकाने का पारंपरिक तरीका भी काफी रहस्यमयी है। इसके लिए सात बर्तनों का उपयोग किया जाता है जो एक दूसरे के ऊपर रखे जाते हैं और इसे जलाऊ लकड़ी का उपयोग करके

पकाया जाता है। चौकाने वाली बात यह है कि सबसे ऊपर वाला बर्तन पहले पकता है और बारी-बारी से सभी बर्तनों का प्रसाद पकते हुए सबसे नीचे वाले बर्तन का प्रसाद सबसे अंत में तैयार होता है।

इस चर्चा के अंत में यह कहना कठिन है कि इन रहस्यमयी घटनाओं के पीछे क्या तथ्य है? विज्ञान भी इन घटनाओं के पीछे का सटीक कारण नहीं बता सका है। क्या हम कह सकते हैं कि धरती पर भगवान साक्षात मौजूद हैं? या हमें अभी भी कई वैज्ञानिक खोज करनी बाकी है, जो भी हो परंतु यह बात तो तय है कि पुरी के मंदिर की वास्तुकला बेजोड़ है और यही इसका मुख्य आकर्षण है। मेरा मानना है प्रत्येक भारतीय को एक बार पुरी की यात्रा जरुर करनी चाहिए- चाहे तो धाम समझ कर, चाहे प्रकृति की अनोखी मिसाल समझ कर ।

श्रीमती अर्चना प्रजापति, स लेप अधिकारी

जांबाज जवान की जुबान से

प्रण लिया हूं भारत मां की रक्षा अंतिम सांस तक करूंगा,
या तो तिरंगे को लहरा कर आऊंगा या तिरंगे में लिपट कर आऊंगा।

डरता नहीं मैं आतंकवाद और आतंकी दंगों से,
मुंह तोड़ जवाब दूंगा दुश्मन को, सर पर बांध कर तिरंगे से ।

फर्क नहीं पड़ता मुझे गर्मी, बरसात, जाड़ों में,
मां की रक्षा करूंगा, रहकर भी पहाड़ों में।

मजाल नहीं इन मुट्ठी भर दुश्मनों की जो एक इंच भी ले जाए मेरे हिंदुस्तान की,
सर्दी की सर्द हवाओं को भी चीर कर रक्षा करूंगा भारत मां के सम्मान की।

बस मेरा मुल्क महक जाए रंग-बिरंगे फूलों से,
खुशी होगी अगर यह शरीर आए लिपटे तिरंगे से।
जय हिंद जय भारत!!

सुश्री वंदना.एस, कनिष्ठ अनुवादक

आत्मकथाओं की भाषा....

किसी भी विशेष समाज के अध्ययन के लिए उस समाज द्वारा लिखित साहित्य का अध्ययन आवश्यक है चाहे उस समाज से संबंधित अन्य समाज द्वारा लिखित रचनाएँ कितनी भी मौजूद हों। कहने का तात्पर्य यह है कि दलित समाज की पहचान सही मायने में तभी हुई जब दलित लेखकों द्वारा अपना साहित्य रचा जाने लगा। उनका दुःख-दर्द, कठिनाइयाँ, शोषण- ये सब बाहरी दुनिया के लिए अनजान था। अगर दलित साहित्य न आया होता तो इस विभीषण सच का अनुभव शायद ही कोई कर पाता। कई विद्वानों द्वारा स्थापित मत है कि किसी भी देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का चित्र तद्युगीन साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। साहित्यिक दृष्टि से हिंदी साहित्य का आधुनिक काल विभिन्न प्रयोगों का युग रहा है जिसके परिणाम स्वरूप बहुविध गद्य रचना प्रणालियों का जन्म हुआ। इन गद्य विधाओं में स्वानुभूति की अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम के रूप में आत्मकथा की गिनती की जाती है जिसमें लेखक अपने जीवन, परिवेश, महत्वपूर्ण घटनाओं, विचारधारा तथा अपने समय की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

यह सर्वमान्य बात है कि अपने विषय में बहुत कुछ बताने की इच्छा मानव-मन में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहती है। अपने जीवन में कटु अनुभवों के अलावा और कुछ भी न हो, विभिन्न सामाजिक तत्वों द्वारा शोषण ही हो रहा हो, उनसे जूझने के लिए साहित्य के अलावा सशक्त दूसरा कोई माध्यम नहीं हो सकता। हिंदी दलित साहित्य में आत्मकथा की उपज इस प्रकार होती है। आत्मकथा के अतिरिक्त कोई ऐसी विधा नहीं है जो प्रत्यक्ष रूप से मानव के व्यक्तित्व का उद्घाटन करने में समर्थ हो। इस दृष्टि से साहित्य की अन्य सभी विधाओं में सबसे अनुकूल एवं सहज विधा आत्मकथा ही प्रतीत होती है। आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक के साहित्य का विश्लेषण अगर किया जाए तो यह तथ्य सामने आता है कि कुछ अपवादों को छोड़कर उस दौर में जितना भी साहित्य रचा गया मुख्यतः विशेष वर्ग के लोगों के लिए समर्पित था। कभी उसका नायक राजा था तो कभी युद्ध का वर्णन किया गया, कभी मनोरंजन के लिए था तो कभी स्त्री के शारीरिक सौंदर्य को महत्व दिया गया। समाज में एक वर्ग हमेशा पीड़ित तथा शोषित होने के लिए बाध्य था, जिसे दलित कहा गया। धीरे- धीरे उन्होंने पाया कि जिस

समाज में वे जी रहे हैं वहां जो साहित्य लिखा जा रहा है, उसमें उनके लिए कोई स्थान नहीं है। मुख्यधारा साहित्य जिसे कहा जाता है उसमें उनका कभी ज़िक्र हुआ ही नहीं। शिक्षा तो उसके लिए एक सपना था और साहित्य तो और भी बहुत दूर की बात थी। निरंतर संघर्ष के उपरांत वह पढ़-लिखकर अपने बारे में सोचने तथा समाज के समक्ष खड़ा होना सीखने लगा। जब उसके गले से पीड़ा जनित वाणी फूटी, किसी को झटका लगा तो किसी के मन में सहानुभूति जाग गई और एक वर्ग ऐसा भी बना जिसने इसे अश्लील साहित्य की कोटि में डाल दिया। बाहर से अगर हम देखेंगे तो लगेगा कि इसका सरोकार सिर्फ दलित समाज से है। मगर यह एक वर्ग-विशेष के साथ पूरे समाज का भी चित्र प्रस्तुत करता है और इसीलिए यह 'मानव-मुक्ति' का साहित्य कहलाता है।

प्राचीन साहित्यकारों में आत्मकथा-लेखन की प्रवृत्ति का पूर्ण अभाव दृष्टिगोचर होता है। उन कवियों के लिए ऐतिहासिकता से पारलौकिकता कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी। मोक्ष प्राप्ति की चिंता में, जिसमें स्वयं के अस्तित्व का कोई महत्व नहीं होता, शायद उन्होंने अपने जीवन पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं समझी। भक्तिकाल तक आते-आते कुछ कवि अपने बारे में कुछ उक्तियाँ लिखने लगे, जिसकी व्यख्या करने से उनके जन्म, जीवन काल से संबंधित जानकारी उपलब्ध हो जाती है। आगे जाकर सन् 1641 में 'अर्धकथानक' लिखी जाती है जो बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा लिखित आत्मकथा है, जिसे बहुत सारे आलोचकों ने हिंदी की पहली आत्मकथा मानी है। यह मुग़ल काल के हिंदी साहित्य में एकमात्र ऐसी पद्यात्मक आत्मकथा है, जिसमें कवि ने अपने जीवन के पचपन वर्षों के इतिहास को प्रस्तुत किया है। हिंदी साहित्य में आत्मकथा की नींव बहुत आगे जाकर भारतेंदु युग में बनती है। इस युग के कवि आत्माभिव्यक्ति को सभ्य संसार का आविष्कार मानने लगे थे। दरअसल यह युग एक प्रकार से आत्मकथा लेखन का उद्भव काल है और आगे जाकर द्विवेदी युग में यह विधा पल्लवित हो जाती है। वृंदावनलाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, माखनलाल चतुर्वेदी आदि आधुनिक काल के प्रमुख आत्मकथाकार हैं।

1990 के दशक के बाद हिंदी साहित्य जगत में एक नव-आंदोलन की तरह आत्मकथाएं उभरने लगती हैं। निश्चित रूप से एक सवाल किसी के भी मन में पैदा हो सकता है कि जब हिंदी साहित्य में पहले से आत्मकथा-लेखन की प्रक्रिया जारी थी तो अलग से दलित आत्मकथा लेखन की आवश्यकता क्यूँ आई? जैसे कि पहले ही कहा गया है, साहित्य में जो कुछ भी लिखा जा रहा था, उसमें विशेष वर्ग के जीवन का ही चित्र मौजूद था। इतिहास तथा साहित्य से वंचित इन लेखकों (दलित लेखक) ने संघर्ष स्वरूप अपने जीवनानुभवों को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया, जो आज सबसे अधिक लोकप्रिय है। यह सर्वज्ञात बात है कि दलित साहित्य के प्रेरणा स्रोत बाबा साहेब आंबेडकर हैं। यद्यपि उन्होंने अपनी आत्मकथा नहीं लिखी, फिर भी

दलित आत्मकथाकारों ने निश्चित रूप से उन्हीं से प्रेरणा ली होगी। दलित आत्मकथाएं सर्वप्रथम मराठी में लिखी गईं। हिंदी में इसकी शुरुआत मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' से होती है। इसके बाद ओमप्रकाश वाल्मीकि की चर्चित आत्मकथा 'जूठन' प्रकाश में आती है। फिर तो आत्मकथाओं का दौर-सा चल पड़ता है। आज हिंदी में अनेक आत्मकथाएं आ चुकी हैं, जिनमें प्रमुख हैं- अपने अपने पिंजरे (मोहनदास नैमिशराय), जूठन (ओमप्रकाश वाल्मीकि), तिरस्कृत (सूरजपाल चौहान), झोंपड़ी से राजभवन (माता प्रसाद), मेरा सफ़र मेरी मंज़िल (डी. आर. जाटव), दोहरा अभिशाप (कौशल्या बैसंत्री), जब मुझे चोर कहा (एन.आर. सागर), तिरस्कार (के. नाथ), मुर्दहिया (डॉ. तुलसीराम) आदि।

साहित्य में नूतनता का संक्रमण भाषा, कथ्य एवं रूप के विभिन्न स्तरों पर उदघाटित होता है। सामान्यतः भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम कही जाती है। साथ ही, भाषा विचारों के आभ्यंतरीकरण का एकमात्र माध्यम है। असल में भाषा हमारे आभ्यंतर के निर्माण, विकास, अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परंपरा से विछिन्न है। इसलिए जीवन के काल और थल को रेखांकित करने वाले साहित्य की भाषा का विवेचन-विश्लेषण मानव जीवन के अनदेखे-अनजाने इलाकों की तरफ प्रकाश डालेगा। दूसरे शब्दों में भाषा का विस्तार जीवन का ही विस्तार है, भाषा का अध्ययन जीवन का ही अध्ययन बन जाता है। स्वाभाविक है कि हर विधा की भाषा की अपनी-अपनी खासियतें होती हैं। लेकिन दलित आत्मकथाकारों की रचनाओं में आक्रोश, दर्द के साथ-साथ एक व्यापक जनसमुदाय का भावात्मक इतिहास प्रस्तुत होता है। जिन लोगों ने जीवन में हर पल पीड़ा, शोषण, अपमान तथा दमन का अनुभव किया है उसका खुला चित्रण है ये आत्मकथाएं।

श्री मयंक कुमार, लेखापरीक्षक

प्रेरणादायी दिनकर

कवि गोपालदास नीरज लिखते हैं -"मानव होना भाग्य है कभी होना सौभाग्य!" आज मैं अपने इस लेख के माध्यम से आप लोगों को एक ऐसे कवि के बारे में बता रहा हूं जिनकी लेखनी आज भी हिंदी साहित्य में सूर्य के समान चमक रही है, हम बात करेंगे महान कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की और देखेंगे कि उनकी चुनिंदा पंक्तियों के माध्यम से हम जीवन में क्या सीख सकते हैं।

*मानव की जिजीविषा का वर्णन करते हुए दिनकर जी लिखते हैं-

"खम ठोक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पांव उखड़,
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।"

*वही जब मंजिल मिलने में देर होती है और ठीक मंजिल से पहले हम निराश होने लगते हैं तो दिनकर जी की ये पंक्तियां एक नया साहस भर देती हैं।

"दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य-प्रकाश तुम्हारा,
लिखा जा चुका अनल-अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलाएगी ही,
अम्बर पर घन बन छाएगा ही उच्छ्वास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है।
थककर बैठ गये क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।"

*हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमने समर्थ लोगों के मौन की कीमत अत्यधिक चुकाई है कई बार तटस्थता भी अन्याय का भागीदार बनने जितना ही बुरा होता है। इस पर दिनकर जी लिखते हैं-

"समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध"

* कुछ लोग भाग्यवाद पर अत्यधिक भरोसा करते हैं और इस वजह से अपने हिस्से का कार्य भी अच्छे से नहीं करते हैं। उनके लिए दिनकर जी ने लिखा है -

“पूछो किसी भाग्यवादी से, यदि विधि-अंक प्रबल है,
पद पर क्यों देती न स्वयं वसुधा निज रतन उगल है?”

*दिनकर जी मानते थे कि क्षमा हमारा मूल स्वभाव होना चाहिए परंतु हमारे अंदर इतनी शक्ति भी होनी चाहिए कि हम आवश्यकता पड़ने पर दुष्टों का दमन कर सकें तभी वह क्षमा शोभा देती है -

"क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो
उसको क्या जो दंतहीन
विषरहित, विनीत, सरल हो।"

*अगर आपमें सच्ची प्रतिभा है आप ने कड़ी मेहनत की है तो देर- सवेर व संसार के समक्ष जरूर आएगी इन भावों को व्यक्त करते हुए दिनकर जी लिखते हैं -

जलद-पटल में छिपा, किन्तु रवि कब तक रह सकता है?
युग की अवहेलना शूरमा कब तक सह सकता है?

* दिनकर जी जीवन की खूबसूरती का वर्णन इन चंद पंक्तियों में कितना बेहतरीन करते हैं -

"उद्देश्य जन्म का नहीं कीर्ति या धन है,
सुख नहीं धर्म भी नहीं, न तो दर्शन है,
विज्ञान ज्ञान बल नहीं, न तो चिन्तन है,
जीवन का अंतिम ध्येय स्वयं जीवन है।"

* अगर हम अपने जीवन को याद करें तो हम सबसे ज्यादा तब सीखते हैं जब हम अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर निकलते हैं अर्थात विपत्ति हमारे लिए एक नई शिक्षा लेकर आती है इसके लिए दिनकर जी ने लिखा है -

"जब विघ्न सामने आते हैं,
सोते से हमें जगाते हैं,
सत्पथ की ओर लगाकर ही,
जाते हैं हमें जगाकर ही"

* स्वतंत्रता युद्ध और हमारी सुरक्षा के लिए बलिदान देने वाले अनगिनत योद्धाओं को दिनकर जी इन पंक्तियों से शब्द पुष्प चढ़ाते हैं -

"जला अस्थियां बारी-बारी
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।"

*अंत में इस उम्मीद के साथ कि हम सभी साहित्य पढ़े और जीवन में नई-नई शिक्षाएं ग्रहण करें मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

सुश्री अर्चना, लेखापरीक्षक

हे! बूँद

मत होना उदास अगर तू न बन पाये कभी विशाल समन्दर
न करना तू अफ़सोस अपने मन में अंदर ही अंदर
अगर तू न मिल पाये कभी पवित्र माँ गंगा से
तो तू न करना कोई समझौता किसी छोटे सागर से
अगर तेरा मन काला तो मुझे लगता है
तुझसे बेहतर है वो यमुना का बेकार नाला
शायद न मिल पाए तू कभी किसी नदिया के दर से
तो तू न उड़ जाना सूरज की दो चार किरणों की डर से
मत होना उदास अगर तू न बन पाए कभी विशाल समंदर
तब तू बनना एक छोटी-सी, प्यारी-सी, निराली-सी नहर
और जाना तू दूर डगर-डगर हर एक शहर-शहर
और अगर न बन पाए तू सागर का मोती लाखों का
मत होना उदास अगर तू न बन पाए कभी विशाल समंदर
न करना तू अफ़सोस अपने मन में अंदर ही अंदर
अगर न दे पाए तू अपना योगदान बिसलेरी को
तो तू शोभित करना किसी खीर की कटोरी को
अगर तू न बन पाये कभी विशाल समन्दर
तब तू बनना एक छोटी-सी, प्यारी-सी, निराली-सी नहर
अफ़सोस न करना तू समंदर न होने का
तू कोई गम न रखना अपने मन में महान न होने का
अफ़सोस न करना और खुद को एक नहर बना देना
चार खेत को तू पानी देना चालीस को तू रोज़गार देना
अगर न दे पाए तू कभी चार को अनार और न हो तुझे खुद पर नाज
तो तू चालीस को रोजगार देना चार सौ को अनाज देना
देश को तू खेती का पवित्र पावन रिवाज देना
खुशियों का तू त्योहार देना चार सौ को तू अनाज देना
खुशियों का तू त्योहार देना तू सस्ती सस्ती प्याज देना
अफसोस न करना और खुद को एक नहर बना देना
चालीस को तू रोजगार देना चार सौ को तू अनाज देना

श्रीमती आरती प्रियदर्शिनी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक मध्यवर्गीय कामकाजी महिला की व्यथा

हम मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाएँ हैं। मध्यवर्गीय कहना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि यह कामकाजी महिला की एक अति विशिष्ट श्रेणी है। इसे समझने के लिए कामकाजी महिलाओं की श्रेणियों को समझना होगा। आइए, इस पर प्रकाश डालकर समझने की कोशिश करें।

कामकाजी महिलाओं की मुख्यतः तीन श्रेणियां होती हैं जो कि पूर्णत: उनकी आय पर निर्भर होती है। इसमें प्रथम श्रेणी है- उच्चवर्गीय कामकाजी महिला वर्ग। यह कामकाजी महिलाओं की उच्चस्तरीय श्रेणी हैं। इसके अंतर्गत आई.ए.एस., आई.पी.एस. जैसे सरकारी उच्च पदों के अतिरिक्त प्राइवेट कंपनियों की सी.ई.ओ., एम.डी. एवं व्यापारिक घरानों की महिलाओं समेत बहुत अच्छा कमाने वाली अन्य महिलाएं भी शामिल हैं। इनका कार्य समय से परे होता है, कभी-कभी ये बिना छुट्टी लिए निरंतर काम करती हैं तो कभी इच्छानुसार काम से लंबी छुट्टी लेकर देश-विदेश घुमने जाती हैं। इनका काम केवल कार्यस्थल तक सीमित होता है क्योंकि घर पर इनकी सेवा के लिए ढेर सारे नौकर-चाकर, रसोइए, आया व अन्य सहायक होते हैं। इन महिलाओं की घर-परिवार और समाज में काफी प्रतिष्ठा होती है।

कामकाजी महिलाओं की दूसरी श्रेणी है - निम्न आय वर्ग वाली महिलाएँ जो मुख्यतः उच्च वर्गीय महिलाओं की सहायक होती है। इनकी विशेषता यह है कि घर के बाहर काम करने के बावजूद ये घर का ही काम करती हैं। उच्च वर्गीय महिलाएँ पूर्णत: निम्न आय वर्ग महिलाओं पर आश्रित होती है, इस वजह से इस श्रेणी की भी समाज में अपनी प्रतिष्ठा है (या यूं कह लो खौफ है)। सप्ताह में एक दिन इनकी भी छुट्टी होती है और उस दिन उच्च वर्गीय महिलाओं के घर में गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

अब बारी आती है हम मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाओं की। हम इस श्रेणी की अति विशिष्ट प्रजाति हैं। हमारी श्रेणी में मुख्यतः सरकारी अथवा प्राइवेट संस्था में सामान्य पदों पर काम करने वाली महिलाएँ आती हैं। हमारी श्रेणी अति विशिष्ट इसलिए हैं क्योंकि इसमें सभी श्रेणियों की महिलाओं का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। हम इतना अच्छा तो कमा ही लेते हैं कि लोन लेकर ही सही, लेकिन घर और गाड़ी खरीद सकें। बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकें। हम प्रत्येक

सप्ताहांत पर बच्चों की खुशी के लिए घूमने जाते हैं, रेस्टोरेंट में खाते हैं। छुट्टियों में घूमने भी जाते हैं। वर्तमान के साथ ही भविष्य को सुंदर बनाने के लिए हम निवेश भी करते हैं।

अब जरा सिक्के के दूसरे पहलू पर नजर डालते हैं। हमारा दिन शुरू होता है एक कामवाली बाई के तरह झाड़ू-पोछा-बर्तन करते हुए। हम लोग कामवाली नहीं रख सकते क्योंकि हम लोन की ई.एम.आई व निवेश के प्रीमियम के बोझ तले पहले से ही दबे होते हैं। बचत हमारी प्रमुख प्राथमिकता होती है। अब एक-दो घंटे की नींद खराब करके अगर चार-पाँच हजार रूपये बचते हैं तो अच्छा सौदा है। फिर हम कभी रसोईया, तो कभी बच्चों की आया बनते हुए निकल पड़ते हैं अपने कार्यालय। वहाँ दिन भर काम करके वापस घर आकर हम उन्हीं कामों में लग जाते हैं। हमारी कभी छुट्टी नहीं होती। यद्यपि घर वालों की नजर में छुट्टी वाले दिन हम छुट्टी पर ही होते हैं परंतु उस दिन घरवालों की फरमाइशें हमें रेस्टोरेंट में काम करने वाले रसोइए और वेटर में परिवर्तित कर देती है। अलग बात है कि बच्चे और पुरूष छुट्टी वाले दिन खुलकर छुट्टी मनाते हैं और उनके छुट्टी-उत्सव के चक्कर में हमें ऑफिस से भी ज्यादा काम करना पड़ जाता है।

हम में एक और विशिष्ट गुण है। हम कभी बीमार नहीं पड़ते (दूसरों की नजर में), किंतु परिवार वालों की बीमारी में हमें छुट्टी लेनी पड़ती है। हमारी सहायता के लिए घर में कोई नहीं होता क्योंकि हम में से ज्यादातर एकल परिवार में रहते हैं। घर के बड़े-बुजुर्ग साथ नहीं रहना चाहते क्योंकि उनकी पूर्व धारणा होती है कि एक कामकाजी महिला उनका ध्यान नहीं रख पाएगी। इस वजह से हमें काम के दौरान अपने छोटे बच्चों की देखभाल करने के लिए उन्हें शिशु-गृह में रखना पड़ता है।

हम मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाओं की घर-परिवार, समाज या कार्यालय कहीं भी कोई विशेष प्रतिष्ठा नहीं होती। दिन भर घर-परिवार एवं कार्य-स्थल के बीच सामंजस्य बिठाने की कोशिश करती हम महिलाओं को पैसा कमाने वाली घमंडी, असामाजिक स्त्री जो पड़ोस में जाकर चुगली ना करती हो और ना जाने क्या-क्या अलग-अलग नामों से जाना जाता है। हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग नजरियों से आंका जाता है। पढ़ी-लिखी काम करने वाली महिला है- बच्चों पर क्या ध्यान देगी? पति को खुद से कम समझती होगी, रिश्तेदारों को समय नहीं देती होगी जैसे ताने हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। बाहर वालों की बात न भी की जाए तो कई बार घर के लोगों को भी लगता है कि हमारे बाहर निकलने के कारण हमारा घर-परिवार गृहणियों की अपेक्षा कम सुव्यवस्थित है। घर तो घर, कार्यालय के अधिकारियों एवं सहकर्मियों को भी कई बार ऐसा लगता है कि घर की चिंता के पीछे हमारा कार्यालय में मन नहीं लग पाता। बहुत बड़ी व्यथा है ये हम कामकाजी महिलाओं की। अपना पूर्ण सहयोग देकर भी हम किसी को प्रसन्न नहीं रख सकते।

खैर, इतना कुछ झेलकर भी डिगे रहने की प्रवृत्ति हम मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाओं को अति विशिष्ट बनाती है। कुल मिलाकर हम 24/7 कामकाजी महिलाएँ हैं जिन्हें उनके आधे काम के लिए कोई वेतन नहीं मिलता। न ही उस अवैतनिक काम को काम की श्रेणी में रखा जाता है। किन्तु, हमें किसी से हमारे कामों के लिए प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है। हम अगर एक दिन की छुट्टी ले लें तो इसमें दो राय नहीं है कि घर और कार्यालय दोनों में भू-चाल आ सकता है (पुरुष सहकर्मी कृपया अन्यथा ना लें क्योंकि यह बात प्रमाणित है कि एक महिला कोई भी कार्य समान योग्यता वाले पुरुष की तुलना में अधिक सटीकता से पूर्ण करती है।) और यह बात भी सच है कि यदि एक पुरुष घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारी एक साथ संभाले तो वह शांत चित्त से नहीं रह पाएगा। यही वजह है कि कई परेशानियों के बावजूद कामकाजी होने की यह दोहरी भूमिका हम गर्व से निभाते हैं। हम कार्यालय में कंप्यूटर का काम करने के अलावा अपने घर की महरी भी हैं, अपने बच्चों की आया भी हैं, बुजुर्गों की सेवा करती हुई नर्स भी हैं और रसोइया, धोबी, शिक्षक और ना जाने क्या-क्या हैं- हाँ हम मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाएँ हैं।

श्री ओम कुमार अड़लक, स लेप अधिकारी

दूसरा सुनील

"सुनील भाई! जब भी कोई आपको दूसरा सुनील दिखेगा तो इन पैसों से आप उसकी मदद कर देना ।" मैं ऐसा बोला तो सुनील भाई मेरी तरफ देखने लगे और मैं उनकी तरफ देखने लगा। उन्होंने झट से मुझे गले लगा लिया।

2007 की यह घटना भोपाल की है, जब मैं अपनी नौकरी लगने के कई दिनों बाद भोपाल आया था। अपने दोस्तों से, उस पुरानी जगह मिलने आया था, जहां मैंने हॉस्टल में रहकर कंपटीशन की तैयारी की थी। वैसे तो मैं था एक बहुत छोटे से शहर का। पापा कोयले खदान कर्मी थे। परिवार में हम चार भाई-बहनों को मिलाकर 6 लोग थे। पापा की छोटी सी तनख्वाह में 6 लोगों के परिवार को पालना बहुत ही मुश्किल काम था। किसी तरह से मेरे पापा ने हम भाई बहनों की बहुत अच्छे स्कूल में पढ़ाई करवाई। पापा का विचार था कि मुझे उनकी तरह ही कोई आईटीआई- पॉलिटेक्निक करके कोयला खदान में ही नौकरी करना चाहिए, क्योंकि स्कूल कॉलेज-टीचर और बैंक के बाद सरकारी नौकरी हमारे एरिया में जो होती थी कोयला खदान की नौकरी। किसी तरह से मैं 12वीं साइंस का छात्र होने के बावजूद भी विषय बदलकर वाणिज्य में अपना ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन भी पूरा किया। ग्रेजुएशन में मुझे एक बहुत अच्छा दोस्त मिला। प्रशांत ! प्रशांत के भैया बैंक में थे और चाहते थे कि उनका छोटा भाई भी बैंक की सरकारी नौकरी में लग जाये। प्रशांत को कहा कि तुम भी जाओ भोपाल, कंपटीशन की तैयारी करो और आगे बढ़ो।

प्रशांत गया भोपाल, मुझे अकेला छोड़कर। मुझे कुछ दिन अच्छा नहीं लगा क्योंकि वह बहुत अच्छा मित्र था। हम दिन का कम से कम 12 से 14 घंटे एक दूसरे के साथ बिताते थे। समय के साथ मुझे भी महसूस होने लगा कि मुझे कुछ करना होगा। मैंने भी विचार किया कि मुझे भोपाल जाकर किसी भी प्राइवेट नौकरी की तलाश करनी चाहिए। इसके अलावा मेरा दोस्त भी वहां था। पापा से मेरी ज्यादा बात नहीं होती थी क्योंकि मुझे लगता था कि मैं उनकी किसी तरह से मदद नहीं कर पा रहा हूं। आजकल के युवा इसको जेनरेशन गैप भी बोल सकते हैं। किसी तरह से मैं उनको बोलकर एक दिन अपना बैग उठाया और सीधे भोपाल। प्रशांत कंपटीशन की तैयारी करने के लिए भोपाल के एरिया लालघाटी में एक हॉस्टल में रहता था और उसने कोचिंग में एडमिशन ले लिया था जहां पर कंपटीशन की तैयारी करवाई जाती। वहां जाकर मैं

जॉब के सिलसिले में प्रशांत के भाई के मित्र से मिलने गया। उनका नाम कादर भाई। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने मुझसे कहा कि तुम पढ़ाई में अच्छे हो और अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? तुम एक कोशिश तो कर सकते हो कंपटीशन की परीक्षा की तैयारी के लिए। कम से कम 2 साल तो तुम अपनी जिंदगी के दे सकते हो। उसके बाद भी तुम्हारा कहीं जॉब नहीं लगता है तो मैं कहीं ना कहीं किसी भी प्राइवेट नौकरी पर लगा दूंगा। यदि सरकारी जॉब लग जाती है तो तुम्हारी लाइफ बन जाएगी।

कादर भाई से मिलने के बाद में मैं थोड़ा किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। मैं सोच में पड़ गया और दिन भर परेशान भी कि क्या किया जाए? बाद में, मैं प्रशांत से मिलने उसके हॉस्टल गया तो वह तब तक कोचिंग क्लास से आया नहीं था। बहुत देर तक उसका इंतजार करने के बाद मैं गुमसुम सा कुछ सोचता हुआ उसके हॉस्टल के डाइनिंग टेबल पर बैठा था। उसी समय प्रशांत के हॉस्टल के एक वरिष्ठ छात्र आए अपने हाथ में लंच बॉक्स लेकर। मुझे देख कर कहा - "भाई! आप प्रशांत से मिलने आए हो क्या?" मैंने कहा- "हां " उन्होंने अपना नाम बताया "विजय"। मेरा नाम पूछा और पूछा खाना खाओगे क्या? मैंने कहा आप खाइए, मैं प्रशांत का इंतजार कर रहा हूं। मुझे गुमसुम देखकर बोलने लगे कि भाई किस सोच में पड़ा है तू? कोई तो बात है? मैंने कहा- "सर! समस्या यह है कि मैं घर छोड़ कर आया था प्राइवेट नौकरी करने के लिए। यहां पर मुझसे किसी ने कहा कि अभी तुम्हारी उम्र है तो सरकारी नौकरी की तैयारी कर लो। वरना प्राइवेट तो बहुत सारी, मिल जाएगी। मैं घर से पैसे बुलवा नहीं सकता और कंपटीशन की तैयारी करने के लिए मुझे कम से कम महीना ₹3000 से 4000 लगेगा। यही सोच में पड़ा हूं कि मैं क्या करूं। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं सरकारी नौकरी की तैयारी करने के साथ-साथ प्राइवेट काम भी करूँ तो मुझे कुछ पैसे मिल जाए जिससे मेरा गुजारा हो जाए? मैं अपने पापा से पैसे कैसे मांग सकता हूं जब उनके पास परिवार चलाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं।"

विजय सर ने मुझसे कहा- भाई! जिन्होंने भी तुझसे यह कहा है, सही कहा है । सोच मत, अभी से लग जा! तैयारी शुरू कर दे! रही बात प्राइवेट काम की तो तुझे कुछ ना कुछ कहीं ना कहीं मिल जाएगा। कहीं और ना सही तो मैं ही कुछ करवा दूंगा। जैसे मैं भी इसी कोचिंग में पढ़ता भी हूं और पढ़ाता भी हूं तो तुझे भी काम मिल जाएगा। थोड़े बहुत पैसे के लिए तो घर पर बोल सकता है। पूरे पैसे घर से बुलवाने की जरूरत नहीं है। समस्या इससे भी बड़ी थी कि मैं घर में अपने पापा से कैसे कहूं? थोड़ी देर बाद प्रशांत आया, उससे मेरी चर्चा हुई। उसने कहा- "अच्छा है! तू चिंता मत कर, थोड़ी बहुत तेरी मदद मैं भी कर दूंगा। जितने पैसे हो सकते, बचाएंगे। अपने खर्चे कम कर देंगे और जमकर मेहनत करेंगे। शायद ऊपर वाला हमारी सुन ले, हमारा साथ दे दे।"

उसकी बात से मुझे हिम्मत आ गई। उसने इतनी बड़ी बात कह दी तो मेरी जो ताकत थी, वह कम से कम 4 गुना हो गई। मैं तुरंत वहां से उठा गया सीधे पीसीओ (फोन-बूथ)। मैंने अपने घर पर फोन लगाया। मम्मी ने फोन उठाया। कुछ बातें होने के बाद में मैंने मम्मी से कहा - "मम्मी! पापा कहां है? पापा से मुझे थोड़ी बात करनी है।" फोन पर पापा से मैंने उनका हालचाल पूछा। सारी बातें होने के बाद में मैंने कहा-"पापा! आपसे एक जरूरी बात करनी है।" मैंने कहा- "क्या 2 साल तक किसी तरह से आप ₹2000 महीना मुझे भिजवा देंगे? मुझे कंपटीशन की तैयारी करनी है। साथ ही प्राइवेट जॉब भी करूंगा। सिर्फ 2 साल की बात है, फिर आपसे कभी भी जिंदगी में एक पैसा नहीं मांगूंगा। उल्टा मैं आपको पैसा कमा कर दूँगा। यह मेरा आपसे वादा है। क्या आप कर सकते हो ?" मुझे लगता है कि उनको मेरी बात पर पूरा भरोसा था और वह आश्वस्त थे। बिना ज्यादा कुछ सोचे समझे उन्होंने हां कह दिया।

भोपाल में रहकर 2000 महीने में गुजारा करना काफी मुश्किल काम था क्योंकि ₹800 मुझे मेरे खाने के दिन होते थे और ₹800 मुझे हॉस्टल के रूम का किराया देना होता था। इसके अलावा कुछ पैसे मैं जोड़ कर ले कर आया था, कोचिंग क्लास की फीस में चले गए। बाकी बचे ₹400 में एग्जाम के फॉर्म भरना, एग्जाम देने जाना, अपने लिए बुक्स, पत्रिका, जरूरत का सामान खरीदना आसान नहीं था, तो आसपास के बच्चों को ट्यूशन पढ़ा कर, टिफिन सर्विस में काम करके, मैं अपने लिए कुछ और पैसों का इंतजाम कर लेता था। उस हॉस्टल में एक खास बात थी। हॉस्टल में सारे लड़के मेरे जैसे। मतलब, सब के परिवार की हालत कुछ खास अच्छी नहीं थी कुछ एक-दो को छोड़कर। सभी एक दूसरे को संघर्ष करते हुए देखते थे। अपने हॉस्टल के यार दोस्तों के साथ मिलकर मैं पूरी तरह से कंपटीशन की तैयारी में जुट गया। कुछ दिनों बाद, प्रशांत का परिवार भोपाल में उसी एरिया में उसी हॉस्टल के सामने एक किराए के घर में शिफ्ट हो गया। अंकल नहीं थे, आंटी मुझे तो पहले से ही जानती थी, दीदी भी। तो मुझे एक और सहारा हो गया। मुझे जब कभी भी भूख लगती थी, चाय पीने का मन होता था तो मैं वहां चले जाता था। मेरा उनके साथ ऐसा रिश्ता था उस मोहल्ले के सारे लोग मुझे उनका दूसरा बेटा मानते थे। उनको यह लगता था कि प्रशांत और मैं बड़े भाई-छोटे भाई है।

किसी तरह दिन बीते, महीने बीते, साल नहीं कहूंगा क्योंकि मुझे याद था मेरे पापा से किया हुआ वादा 2 साल के अंदर मुझे तैयारी करके किसी भी तरह सरकारी नौकरी पानी थी। हम केवल कर्मचारी चयन आयोग और रेलवे के फॉर्म भर के परीक्षा देने जाते थे। बैंक की नौकरी के लिए योग्य नहीं था क्योंकि मेरे ग्रेजुएशन में 60 % से कम थे और उन दिनों बैंकिंग में किसी भी लेवल की नौकरी के लिए 60% से ऊपर ही मांगते थे। तैयारी तो चल रही थी। परीक्षा के लिए कुछ फॉर्म भरते थे, परीक्षा देते थे, परिणाम का इंतज़ार करते हुये फिर से किसी और परीक्षा के लिए कुछ फॉर्म भरते थे। उन दिनों सिविल सेवा परीक्षा का रिजल्ट

आया। हॉस्टल में बैठे-बैठे एक दिन हंसी मजाक कर रहे थे। सिविल सेवा परीक्षा के रिजल्ट में सब लोग एक दूसरे का नाम अखबार में पढ़ने का बहाना करते हुए चिढ़ा रहे थे। इसी बीच में मेरा एक दोस्त दोस्त रोजगार समाचार पढ़ते हुए बोला, मेरा कर्मचारी चयन आयोग (एस एस सी) की एक परीक्षा में रिटेन क्लियर हो गया। मैंने कहा- "भाई अभी तक मैं और बाकी सारे मित्र तुम्हारे मजे ले रहे थे। अब तुम भी हमारे मजे ले रहे हो?" उसने कहा- नहीं भाई! कसम से! मैं झूठ नहीं कह रहा हूं। रोजगार समाचार में तुम्हारा नाम है। चाहो तो आकर देख लो। उस कमरे में हम सात-आठ लोग बैठे हुए थे।

उसने रोजगार समाचार दिखाया। मुझे अपनी आंखों में यकीन नहीं हुआ। वाकई उसमें मेरा नाम लिखा हुआ था परीक्षा के लिए। मैं क्वालीफाई कर गया था। यह नौकरी थी सांख्यिकी विभाग में, सांख्यिकी पर्यवेक्षक। अगला लेवल इंटरव्यू था। काफी खुशी हुई कि चलो कोई तो एग्जाम निकला मेरा। अब मुझे इंटरव्यू की तैयारी करनी थी और किसी तरह से इस नौकरी को पाना था। मैं इंटरव्यू की तैयारी करने लगा। कुछ दिनों के बाद इंटरव्यू के लिए गया। चूँकि यह मेरा पहला साक्षात्कार था, मैं डरा हुआ था और मैंने अपने साक्षात्कार में बुरा किया। वापस आया और तैयारी करने लगा। मैं परिणाम का इंतज़ार नहीं कर रहा था क्योंकि मुझे पता था कि मुझे अंतिम चयन नहीं मिलेगा। इसी बीच में मैंने एस एस सी का एक और एग्जाम का फॉर्म भरा। उसका प्री मैंने क्लियर कर लिया था, और अगला लेवल की तैयारी करने लगा।

एक दिन हॉस्टल में फोन की घंटी बजी। मुझे किसी ने आवाज दी- फोन है। कोई लड़की है जो तुझे पूछ रही है। मैं गया फोन पर, मैंने जैसी आवाज सुनी। मैं पहचान गया। यह मेरे साथ तैयारी करने वाली और हमारी कोचिंग में पढ़ने वाली भावना है। वह मेरे हाल चाल पूछने लगी। फिर मुझसे कहा कि तेरा एस एस सी में हो गया है आगे का क्या प्लान है?

"मेरा प्री निकल गया है, अब अगला लेवल की तैयारी कर रहा हूं।" यह बोलकर मैंने उसके बारे में पूछा तो वह भी अपने बारे में बताने लगी कि उसे क्या करना है, क्या नहीं करना है। थोड़ी देर बाद बात ही बातों में उसने मुझसे कहा कि- "तू तो बोलता था कि तेरा इंटरव्यू बहुत बेकार गया। सिलेक्शन नहीं होगा?" मैं उसकी बातें समझ नहीं पाया। मैंने कहा कि मुझे समझ नहीं आया। भावना मुझसे बोली कि तूने कहा था ना तेरा इंटरव्यू अच्छा नहीं गया। फिर तेरा सांख्यिकी पर्यवेक्षक में सिलेक्शन कैसे हो गया? चौंक पड़ा मैं ! "सिलेक्शन?" "कब आया रिजल्ट?" उसने कहा रिजल्ट कब का आ गया और हम लोग जितने लोग इंटरव्यू देने गए थे, उसमें से चार पांच लोगों का सिलेक्शन हो गया। उसमें से एक तेरा नाम भी है।

"मेरा नाम भी है।" मुझे अपने कानों पर बिल्कुल भी यकीन नहीं हो। मैंने कहा एक बार और फिर से कहना! उसने कहा- "हां, तेरा सिलेक्शन हो गया है।" मैंने उसको कहा- "आई एम सो

सॉरी, भावना ! मैं अभी फोन रख रहा हूं। मैं तुझसे बाद में फोन करके बात करता हूं। मुझे बिल्कुल पता नहीं था कि रिजल्ट आ गया है। तूने मुझे बताया इसके लिए थैंक यू। जैसे मैंने फोन रखा। मैंने देखा कि मेरे पीछे सारे दोस्त मेरे खड़े हुए थे। शायद उन्होंने मेरी बात सुन ली थी। मेरी भी खुशी का ठिकाना नहीं था। 2 साल पूरे होने में तब भी कुछ 4 महीने बचे हैं। वास्तव में।

मैं सबसे पहले प्रशांत के घर गया। आंटी जी दीदी दोनों से आशीर्वाद लिया। पीसीओ से मैंने अपने घर पर फोन लगाया। मम्मी ने फोन उठाया। मैंने मम्मी से कहा -"मम्मी! सिलेक्शन हो गया है। मम्मी, पापा सारे दोस्त, सभी लोग खुश। मैं भी खुश था। पोस्टिंग भी आ गई पुणे में। मैं भी अपना बैग उठाया और चल पड़ा। नागपुर से ट्रेनिंग लेने के बाद में पुणे और पुणे से आगे कोल्हापुर! एक महीने के बाद 8889 रुपए मेरी पहली तनख्वाह। काफी अच्छा लगा, सुकून था पर मेरा मन लगा रहता था भोपाल में मेरे पुराने दोस्तों के बीच में जो अभी भी कंपटीशन की तैयारी कर रहे थे। मैंने मोबाइल खरीदा और दोस्तों से मोबाइल पर बात करता था। मेरे एक दोस्त अमित ने बातों-बातों में मुझसे कहा कि हमारे हॉस्टल का एक लड़का सुनील हॉस्टल छोड़ कर वापस अपने घर जा रहा है। मुझे लगा शायद उसकी नौकरी लग गई है और वो जा रहा है! तो उन्होंने कहा- "नहीं। उसके परिवार की हालत कुछ ज्यादा अच्छी नहीं है और परिवार वालों ने कहा है कि अब वह ज्यादा खर्चा नहीं उठा सकते हैं उसके भोपाल में रहने का। और इसीलिए उसे वापस जाना है।"

पता नहीं मेरे मन में क्या विचार आया? मैंने अमित से कहा कि मैंने कहा-"भाई, मैं तुझसे एक काम करवाना चाह रहा हूं, पर इस बारे में किसी को बताना नहीं।" उसने कहा,-"क्या?" मैंने कहा- "सुनील भाई के परिवार के हालात ठीक नहीं है और वह का भोपाल का खर्चा नहीं उठा सकता। मैं हर महीने मैं ₹800 अपनी तनख्वाह में से ट्रांसफर करता रहूंगा तेरे अकाउंट में। तू पैसे निकालकर सुनील भाई को देते रहना और यह कहना कि वह पैसे तू अपनी जेब से दे रहा है। कुछ समय के बाद जब भी आपकी नौकरी लगेगी यह पैसे आप उसे लौटा देना।" पर मैंने उसे आगाह किया कि भाई सुनील भाई को यह मत बताना कि यह पैसे मैंने भिजवाए है कोल्हापुर से। अमित ने मुझसे कहा, "ठीक है, नहीं बताऊंगा।" मैंने भी सोचा सुनील भाई हॉस्टल में रहकर तैयारी करेंगे। पढ़ने में भी अच्छे हैं, होशियार हैं और लगता है कि शायद जल्दी नौकरी लग जाएगी और वह दिन दूर नहीं है। पर यदि वह घर चले जाते हैं तो शायद नौकरी का सपना टूट जाएगा।

कुछ दिनों तक सुनील भाई और भोपाल में रहे, तैयारी करने लगे। मेहनत के बाद सुनील भाई भी एक दिन उसी नौकरी में उसी डिपार्टमेंट में लग गए, जहां पर मैं था। मैंने अपना ट्रांसफर भी कोल्हापुर से जबलपुर करवा लिया जो कि मेरे घर के पास में ही था। जबलपुर से मेरा

भोपाल जाना बहुत आसान था। हॉस्टल के सारे मेरे मित्र सभी अपनी अपनी जगह पर अपनी अपनी नौकरी में लग गए थे मेरा दोस्त प्रशांत एमबीए करने लगा और एमबीए करने के बाद में प्राइवेट कंपनी में काम करने लगा और जिस घर में वह किराए से रहते थे, वही घर उन्होंने खरीदा था। एक दिन ऐसे ही मेरा मन किया कि हफ्ते के अंत में मैं भोपाल जाता हूं। सारे दोस्तों से मुलाकात करते हैं।

उस दिन मुलाकात के लिए मैंने सारे दोस्तों को बुलाया। सभी लोग वहां आ चुके थे। प्रशांत के घर पर मिलने का प्लान था। जैसे ही मैं वहां पहुंचा। सबसे पहले मुझे सुनील भाई दिखे। प्रशांत के घर के सामने मैं उनसे बात किया तब तक मेरे दूसरे मित्र भी आ गए। सभी लोग चर्चा कर रहे थे। इसी बीच में सुनील भाई ने अपने जेब से कुछ पैसा निकाल कर मेरे हाथ में दिए। “सुनील भाई यह किस बात के पैसे?” मैंने पूछ लिया। सुनील भाई ने मुझसे कहा- ओम भाई? आप तो ऐसी बात मत करो, मुझे पता है। भोपाल में रुकने में मेरी मदद आपने की है। वह पैसे आप ही मुझे कोल्हापुर से भिजवाते थे। “मुझे सब पता चल गया।“ सुनील भाई ने कहा। मुझे तो समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ, क्या कहूं? मैंने कहा- “सुनील भाई। यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। मुझे पता था कि आप काफी मेहनती है। इसीलिए मैंने यह पैसे आपको भिजवाये थे ताकि आप घर न जाएँ, यहीं रहकर परीक्षा की तैयारी करें और नौकरी पाने का सपना पूरा करें। "हमारी तो सिर्फ बात होती थी। गहरी दोस्ती भी नहीं थी। थोड़ी बहुत चर्चा होती थी, पर उसके बाद भी आपने इतना मेरे लिए सोचा” - सुनील भाई ने मुझसे कहा। मैंने कहा- “सुनील भाई। यह तो हमारी दोस्ती है और एक दोस्त एक दोस्त की मदद ही तो कर सकता है। जब भी, जैसे भी हो सके, मैंने वही किया। अमित को मैंने कहा था कि आपको यह बात कभी ना बताए। सुनील भाई मुझसे बोले, कि पैसे मैं अमित को ही दे रहा था। अमित ने लेने से मना कर दिया। जब मैंने बहुत दबाव डाला तो मुझे सारी बात बता दी। वह भी मजबूर था क्योंकि वह पैसे नहीं ले सकता था।

मैंने कहा-“सुनील भाई ! यह पैसे तो मैं भी नहीं ले सकता। सुनील भाई ने कहा- “क्यों”

“सुनील भाई! बस बचपन से सीखा है और देखते भी आया हूं। हमें हमेशा किसी ना किसी की, किसी न किसी रूप में मदद करनी चाहिए।“- मैंने कहा। “सुनील भाई, मुझे पैसे नहीं चाहिए। बस इतना याद रखना जब भी आपको कोई सुनील मिले, जिसे मदद की जरूरत हो, उसकी तुम मदद कर देना। और उस सुनील को कहना भाई जब भी तुझे भी कोई और सुनील मिले जिसे मदद की जरूरत है उसे तुम मदद कर देना। यह पैसे आगे बढ़ते रहेंगे और ऐसे कई लोगों की मदद होती रहेगी।

तभी प्रशांत के घर के अंदर से दीदी की आवाज आई- “अरे तुम लोग बाहर खड़े रहोगे क्या? अंदर आओ, चाय ठंडी हो रही है।“

और हमलोग घर के अंदर हो लिए ।

श्री दीपक कुमार सिंह, लेखापरीक्षक

मेरी प्यारी बेटी

तुम हो मेरे जीवन का उजाला
तुम्हारे साथ हर पल है खुशहाल
तुम्हारी मुस्कान से मिलता है सुकून
तुम्हारी हर ख्वाहिश पूरी करना है मेरा जुनून
तुम हो मेरे दिल का ताज
तुम्हारे लिए कुछ भी करूंगा मैं साज
तुम्हारी हर बात मुझे प्यारी है
तुम्हारा हर सपना मेरा सहारा है
तुम हो मेरे आसमान की परी
तुम्हारे साथ होता है मुझे सब कुछ न्यारी
तुम्हारा हर पल मुझे गर्व है
तुम्हारी हर कामयाबी मेरा स्वाभिमान है
मेरी प्यारी बेटी
तुम हो मेरे जीवन का उपहार
तुझसे मिलकर मुझे मिला है संसार

श्री प्रसाद पी जोशी, सहायक पर्यवेक्षक

पानी का महत्व

जल ही जीवन है, ये हमेशा हम सुनते हैं, लेकिन मानते कितना हैं? क्या हम जल की रक्षा जीवन की तरह करते हैं? क्या हम उसे भी उतना महत्व देते हैं, जितना किसी इन्सान की जिंदगी को? इन सवाल के जवाब सबके पास न में ही होंग।

जिस प्रकार से पानी की बर्बादी होती है, उससे यह सीख जरूर मिलती है कि पानी को आने वाले कल के लिए बचाना चाहिए। आज की पानी की बचत आने वाले समय की जरूरत है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि खुले नाले, और खराब मशीनरी व पाईप के कारण पानी व्यर्थ जाता है, जिस वजह से पानी काफी ज्यादा बर्बाद हो जाता है।

जल से ही हमारा जीवन चलता है। पर क्या इसे कोई मानता है? आज का जो समय है, उस समय मे पानी की एक-एक बूंद बचाना आवश्यक है। यह भी सत्य है ही अगर आप पानी नही बचायेंगे तो आने वाली पीढ़ी एक एक बूंद को तरसेगी। जितनी तेजी से धरती पर जल स्तर घट रहा है उससे तो ऐसा ही लग रहा है। शुरूआत मे जहाँ पृथ्वी पर काफी गहराई में पानी था तो आज ऐसी स्थिति है कि आज 90 से 100 फुट पानी और नीचे जा चुका है।

हम सब जानते हैं कि पानी के बिना हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते, लेकिन फिर भी हम इसे फिजूल में खर्च कर देते हैं। हमारी पृथ्वी का 70% भाग जल से डूबा हुआ है लेकिन 1-2 % ही इसमें से उपयोग करने लायक है। पानी एक ऐसा धन है जिसे हम सहेज कर रखेंगे तभी हमारी आने वाली पीढ़ी उसे उपयोग कर पायेगी। जल है तो कल है।

पानी की बर्बादी को रोकने के लिए हम अपने घर से ही शुरुआत कर सकते हैं। बस थोड़ी सी समझदारी से उठाये हुए कदम के साथ हम अपनी आने-वाली पीढ़ी को यह तोहफा दे सकते हैं।

- सबसे पहले आपको इस बात का ख्याल रखना चाहिए की पानी कम से कम व्यर्थ हो उसका सरंक्षण हो सके।
- एक अनुमान के अनुसार अगर पृथ्वी पर से थोड़ा-थोड़ा पानी रोजाना बचाया जाए तो काफी पानी बच सकता है।

- दैनिक जीवन के उपयोग के पानी का जितना आवश्यक हो उतना ही इस्तेमाल करें ताकि पानी की बचत हो सके।
- नहाते समय जितना हो सके पानी को बचाएँ बाल्टी भरने पर नल को बंद कर दे व आवश्यकता होने पर ही जल का उपयोग करें ।
- नल को मजबूती से बंद करें ताकि पानी व्यर्थ न हो।
- पेड़-पौधों को काटने से रोके ताकि पर्यावरण के नियमों के अनुसार वर्षा का पानी हमें मिल सके।

पानी के महत्व को समझाने के लिए हर साल 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है ताकि लोगों को इसका सही महत्व बताया जा सके। इसकी सबसे पहले शुरूआत 22 मार्च 1993 में सयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी। लेकिन उसके बाद इसकी घोषणा पूरे विश्व में की गई ताकि लोगों को पानी के महत्व, आवश्यकता और संरक्षण के बारे में जागरूक किया जा सके। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य है लोगों को जल संरक्षण का महत्व बताना। क्योंकि इसको बताने से ही हम आने वाली पीढ़ियों के लिए पानी बचा पाएगें। इसके लिए हर साल एक थीम तैयार की जाती है। जिसमें पानी के अलग-अलग महत्व बताए जाते हैं। इसमें ये भी समझाया जाता है कि, किस तरह से आप कम पानी से अपना काम कर सकते हैं। इस बार भी इसकी थीम तैयार की जाएगी। उसी के हिसाब से लोगों के सामने पानी को सुरक्षित रखने की जानकारी दी जाएगी।

श्री मयंक कुमार, लेखापरीक्षक

गजलों की कहन

इस लेख का मुख्य उद्देश्य आपको कुछ खूबसूरत शेर से परिचित कराने के साथ-साथ कविता और गजलों में आपकी रुचि जगाना है| इसकी शुरुआत वसीम बरेलवी की खूबसूरत पंक्तियों के साथ करना चाहूंगा -

"कौन-सी बात कहाँ, कैसे कही जाती है
ये सलीक़ा हो, तो हर बात सुनी जाती है"

* जब भी आपका आत्मविश्वास डगमगाने लगे तो अपने सबसे खूबसूरत गुण को याद कीजिएगा और बशीर बद्र की यह पंक्तियां आपको नए आत्मविश्वास से भर देगी -

"हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है
जिस तरफ़ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा"

* नफरत को खत्म करना केवल मोहब्बत से संभव है इसके लिए वसीम बरेलवी ने लिखा है-

"वो मेरे चेहरे तक अपनी नफरतें लाया तो था
मैंने उसके हाथ चूमे और बेबस कर दिया"

* जब जीवन में आप संघर्ष कर रहे हो और अधिकांश लोग दूसरी तरफ हो तो दुष्यंत कुमार के इस चुनिंदा शेर से खुद को शाबाशी देना -

इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।

एक चिनगारी कही से ढूँढ लाओ दोस्तों,
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

* कई बार जाने अनजाने में कुछ लोगों से हमारी अनबन हो जाती हैं और हम नफरतों में इतने अंधे हो जाते हैं कि उनका नुकसान करने के लिए सारी नैतिकता भूल किसी भी हद तक चले जाते हैं तो ऐसे समय में हमें बशीर बद्र की ये पंक्तियां याद रखनी चाहिए -

"दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे
जब कभी हम दोस्त हो जाएँ तो शर्मिंदा न हों"

*आमतौर पर हम सभी को ऐसे दोस्त या परिचित अधिक प्रिय होते हैं जो हमेशा हमारे बारे में अच्छा बोले पर हमारे व्यक्तित्व के विकास के लिए ऐसे लोग आवश्यक हैं जो आवश्यकता पड़ने पर हमें वास्तविकता का भान कराए। निंदक नियरे राखिए की तर्ज पर लिखा गया शकील आज़मी का यह खूबसूरत शेर पढ़िए -

"जो तेरे ऐब बताता है, उसे मत खोना
अब कहाँ मिलते है आईना दिखाने वाले"

* कई बार हम कितने ही तकलीफ में क्यों न हो कुछ लोगों की एक झलक हमारे सारे तकलीफ को दूर कर हमें उस क्षण के लिए अच्छा एहसास करा जाती है। मिर्ज़ा ग़ालिब का यह खूबसूरत शेर इस एहसास के नाम -

"उन के देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक़
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है"

* बशीर बद्र का यह शेर पढ़िए और उसमें अधूरेपन को महसूस कीजिए जो पास रहकर भी बहुत दूर रह गया -

"साथ चलते आ रहे हैं पास आ सकते नहीं
इक नदी के दो किनारों को मिला सकते नहीं
देने वाले ने दिया सब कुछ अजब अंदाज से
सामने दुनिया पड़ी है और उठा सकते नहीं"

* जीवन में अगर किसी कार्य में मनोवांछित सफलता न मिली हो तो यह शेर धीमे से गुनगुनाइए और फिर से नए प्रयास में लग जाइए -
"गिरते हैं शहसवार ही मैदान-ए-जंग में
वो तिफ़्ल क्या गिरेगा जो घुटनों के बल चले

*कई बार किसी शख्स से बात करने के लिए आपके पास पूरे दुनिया जहान की बातें होती हैं पर यह हो नहीं पाता.... बशीर बद्र की यह पंक्तियां इस दर्द को बयां करती हैं -

"न जी भर के देखा न कुछ बात की
बड़ी आरज़ू थी मुलाक़ात की"

*कविता और साहित्य हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है कई बार बस कुछ पंक्तियां आपके जीवन की दशा और दिशा बदल सकती हैं इसलिए पढ़ते रहें और सीखते रहें।

श्री संजीव चन्द्र पाठक, स लेप अधिकारी

चलो

दिखती मुकम्मल है फिर भी अधूरी कहानी

कि किरदार बनकर साथ चल सको तो चलो

तलाश है मुझे किसी की, जाने क्यों, कब से

तलाश मेरी खत्म कर सको तो चलो

रुलाया बहुतों ने वजह दे सको मुस्कुराने की तो चलो

अंतरमन जो प्यासा है उसे

स्नेह से बुझा सको तो चलो

जीवन के तूफ़ान में जब भी

विचलित हूँ साथ दे सको तब तो चलो

तन की खूबसूरती को छोड़ मन को पहचानो तो चलो

हर सफ़र में जिंदगी के

अगर साथ दे सको तो चलो

श्रीमती साधना सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

भारत की विदेश नीति

आजादी के 75 वर्षों के बाद भारत ने विश्व में अपना अलग पहचान बना रखी है। आज हर देश भारत से दोस्ती बनाए रखना चाहता है इसका एक अच्छा उदाहरण यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध में देखा जा सकता है। दोनों ही देश ने भारत को युद्ध में हस्तक्षेप करने को कहा पर भारत ने तटस्थता को अपनाया। रूस भारत का पुराना मित्र देश रहा है। हर समय रूस ने भारत का साथ दिया है वह चाहे पाकिस्तान के साथ युद्ध हो या चीन के साथ। इसलिए जब युद्ध के दौरान पूरे विश्व ने रूस से कच्चा तेल आयात करना बंद कर दिया तो भारत ने रूस से कच्चा तेल कम दामों पर आयात कर उसे अपने देश में रिफाइन कर दूसरे देशों को बेचा और अपनी जीडीपी भी बढ़ाई और रूस के साथ मित्रता भी। रूस व अमेरिका एक-दूसरे के कट्टर विरोधी लेकिन दोनों भारत के साथ मित्रता बनाए रखना चाहते हैं। हाल ही में अमेरिका ने भारत के साथ कई महत्वपूर्ण समझौते किए हैं। पाकिस्तान भारत का हमेशा विरोध ही रहा है फिर भी जरूरत के समय भारत ने उसे सहायता कर मानवता का परिचय दिया है। कोरोना काल में छोटे-छोटे देश कोविड-19 टीके के लिए हाहाकार मचा रहे थे, भारत में 97 देशों को 11.54 करोड़ डोज टीका भेज कर एक अच्छे राष्ट्र होने का परिचय दिया। आज भारत वैश्विक स्तर पर विकास कर रहा है। इसका एक अच्छा उदाहरण हमारे यहां नए-नए उद्योग धंधों की स्थापना होना है। विश्व के सभी देश भारत में अपना उद्योग स्थापित करना चाह रहे हैं। एक समय था जब चीन भारत पर आसानी से हमला कर दिया था लेकिन अब वह भी भारत पर हमला करने से डरता है क्योंकि यदि वह ऐसा किया तो पूरा विश्व (अपवाद छोड़कर) भारत के पक्ष में खड़ा हो जाएगा। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और हमारे विदेश मंत्री श्री एस जयशंकर के कार्यकाल में हमारी विदेश नीति और भी ज्यादा विकसित हो रही है। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत पूरे विश्व में एक शक्तिशाली देश बन कर उभरेगा।

श्री पंकज कुमार, सहायक पर्यवेक्षक

जीवन की सच्चाई

मृत्यु मंजिल और जिंदगी रास्ते हैं।
जीवन के यही वास्ते हैं।
शरीर नश्वर है व आत्मा अमर है
कर्म ही शेष, अनंत व अभेद्य है।
पृथ्वी लोक में कीर्ति यश ही

रास्तों पर पला व्यक्ति ज्ञानी व महलों का अज्ञानी
धनकुबेरों की जिज्ञासा आखिर ये कैसी अभिलाषा।

जहर की आग दो निवाले से
या सोने चांदी के थालों से
महलों में स्वर्ण आसन पे
कंकड़ों पे या चट्टानों पे
झोपड़ी या शीशमहल
क्षुधा मिटाता एक समान।

यायावर भी जिंदगी जीते हैं।
दुखों को पीते हैं
चट्टानों सा फौलाद हो के
बाधाओं को जीते हैं।
सर्दी गर्मी बारिश की मार
हंसते हंसते करते हैं पार
बचपन ही पलता है मुश्किलों में
यौवन कठिनाइओ का साथी
जिसकी आंख मिचौली
उनको अति भाती।

सर्वत्र भौतिक सुख(सोने-चांदी) को पाने की होड़ है।
जिसको छोड़ के ही जाना एक ओर है।
एक दूसरे को हराने में जिन्दगी गवां देते हैं।
अपितु अंतिम यात्रा में साथ नहीं आते है।
यश कीर्ति ही सच्चे साथी जो जाने के बाद भी रहते हैं।
जिंदगी की यही सच्चाई है फिर भी अनंत लड़ाई है।
नश्वर शरीर की क्रूर सच्चाई है।
अपितु संपूर्ण जगत में रहस्य गहराई है

श्री शिव शंकर, कनिष्ठ अनुवादक

बीज से सीख

यह कहानी है एक बीज की, इस धरती पर सृजनता और निरंतरता का एक मात्र प्रतीक की, जो हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं के साथ संबंधित महत्वपूर्ण सबक सिखाती है। प्रत्येक पुष्प और पेड़ के पीछे एक सामान्य से लगने वाली कहानी होती है जो कि एक छोटे से बीज से उत्पन्न होता है और फिर उस बीज में सपने जन्म लेते हैं। यह सपने उन्हें एक समृद्ध और सम्मानित जीवन की ओर प्रेरित करते हैं। धरती के नीचे छिपा हुआ बीज, जब धरती के महत्वपूर्ण तत्वों के संपर्क में आता है, तो उसमें उठने और आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा होती है। वह धीरे-धीरे रूपांतरित होकर एक नया पौधा बनता है, जो ऊंचाइयों को छूने की ओर तेजी से बढ़ता है। बीज की ज़िंदगी एक अद्भुत संघर्ष से भरी होती है। बीज का सपना उसके अंदर छुपी अभिलाषा होती है, जो उसे पूर्णता और समृद्धि की ओर प्रेरित करती है। यह सपना उसकी स्वाभाविकता और उन्नति की इच्छा को प्रतिबिंबित करता है। जैसे हमारे सपने हमारे लिए महत्वपूर्ण होते हैं, वैसे ही बीज के लिए भी उसका सपना उसके विकास और प्रगति के लिए महत्वपूर्ण होता है। बीज की अंतरात्मा की आवाज, वास्तविकता में एक रहस्यमय और उपलब्धि की कहानी है।

बीज एक छोटा सा बुनियादी जीवंत पदार्थ होता है, जिसमें पूरा पौधा या पेड़ छिपा होता है। यह भविष्य में एक विशाल वृक्ष बनने की संभावना को समेटता है। धरती के नीचे छिपा होता हुआ, वह अपने आसपास के विशाल और अनजान माहौल से अनभिज्ञ रहता है। लेकिन इस छोटे से बीज के अंदर सपने बहुत बड़े होते हैं। यह बीज सोचता है, सपने देखता है और अपने आप को धरती के सारे पेड़-पौधों में ऊँचा दिखना चाहता है। इसी तरह, हर व्यक्ति के अंदर भी एक अंतरात्मा होती है, जो उसके सभी कार्यों, संवेदनाओं और सोच को संभालती है। इस अंतरात्मा की आवाज बाहरी शोर और उल्लास से अलग होती है और इसे सुनने के लिए हमें ध्यान और स्थिरता की आवश्यकता होती है। जैसे कि बीज अपने आसपास के संबंधित तत्वों को समझकर उन्हें अपने विकास के लिए उपयोग करता है, हमें भी समझदारी से अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों को विवेचना पूर्वक लेना चाहिए और उनसे समृद्धि की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

जब बीज धरती से ऊपर की दिशा में बढ़ता है, तो वह अपनी दिशा में स्थिर रहता है। हमें भी जीवन में अपने लक्ष्यों की दिशा में बढ़ते हुए स्थिरता रखने की आवश्यकता होती है, क्योंकि ज़िंदगी में अनेक तरह की भविष्यवाणियों और परिवर्तनों के बीच हमें अपने लक्ष्यों से हटने से बचना होता है। सपने हमें प्रेरित करते हैं, हमारे जीवन को रंगीन बनाते हैं और

हमें ऊंचाइयों तक पहुंचाते हैं। हमारे सपने हमारे लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं और हमें उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब हम अपने सपनों की ओर दृढ़ता से बढ़ते हैं, तो हमारे अंदर की छुपी शक्तियों को पहचानते हैं और उनका उपयोग होता है। हमारे सपने हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग दर्शाते हैं और हमें समृद्धि और सम्मान की ऊंचाइयों तक पहुंचने का साहस प्रदान करते हैं।

बीज की आत्मा हमें सिखाती है कि हमारे अंदर एक अद्भुत और असीम सकारात्मक शक्ति है जो हमें सच्चे और समृद्धशाली जीवन की दिशा में प्रेरित करती है। हमें अपनी आत्मा की आवाज को सुनने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। जब हम अपनी आत्मा की आवाज सुनते हैं, तब हम अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। बीज की आत्मा हमें सिखाती है कि विकास के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। वह धरती के नीचे सुंदर पौधे बनने की कविता गाने में नहीं घूमता है, बल्कि धैर्यपूर्वक अपने विकास के लिए इंतज़ार करता है, हमें भी अपने सपनों को पूरा करने के लिए धैर्य से काम करना चाहिए। सफलता देर से भी आती है और हम में इसका सामना करने की क्षमता होनी चाहिए। बीज हमें समझदारी के साथ निर्णय लेने की क्षमता की सीख देता है। बीज की आत्मा एक गहरा तत्व है जो उसके अंदर छिपी जीवनशक्ति और संजीवनी का प्रतिनिधित्व करता है। यह आत्मा बीज के विकास और वृद्धि के लिए जिम्मेदार होती है और उसे जीवित रखती है। बीज की आत्मा उसके अंदर छिपी शक्ति, प्रेरणा और संजीवनी को बढ़ावा देती है जो उसे उच्चतम स्थान तक पहुंचाने में सहायक होती है।

बीज की आवाज हमें हमारे अंदर छिपी गुमनाम संदेशों को समझने और सच्चाई के साथ अपने जीवन की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करती है। बीज की आवाज हमें दिखाती है कि हमारे अंदर एक समर्थन शक्ति है जो हमें अपने योग्यताओं का परिचय करने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। हम में इसकी आवाज को सुनने की क्षमता होनी चाहिए और उसे अपने लाभ के लिए उपयोग करना चाहिए। बीज की आवाज न तो शोर में समाहित होती है और न ही उच्च स्वरों में उभरती है, अपितु यह एक नम्र और गुमनाम संदेश अपनी अंतरात्मा से हमें सुनाता है। बीज की आवाज, हमारे अंदर की गहराईयों में बसी हुई है, जो हमें सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती है। बीज की अंतरात्मा की आवाज हमें यह सिखाती है कि हमारे अंदर एक निरंतर गुरु और प्रेरक है, जो हमें सफलता, समृद्धि, और स्वयं के साथ समर्थ बनाती है। हमें अपनी अंतरात्मा की आवाज को सुनने की क्षमता विकसित करनी चाहिए और उसे पूर्णता की ओर आगे बढ़ने में समर्थ होना चाहिए।

बीज की अभिलाषा एक उदाहरण है कि जीवन में हमें छोटे स्तर से शुरू करने की जरूरत है। हमें धैर्य रखना और अपने सपनों को पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। सफलता और समृद्धि के लिए हमें अधीर नहीं होना चाहिए, बल्कि साधना और कठिनाईयों के साथ समर्थ रहना चाहिए। अगर हम छोटे-छोटे कदम उठाते हैं और अपने लक्ष्य

की दिशा में अग्रसर रहते हैं, तो हम अवश्य ही सफलता की ऊंचाइयों को छू सकते हैं। बीज अपने विकास के लिए सभी प्राकृतिक परिस्थितियों में सजग रहता है। हमें भी अपने जीवन में सभी परिस्थितियों के साथ सजग रहना चाहिए और समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए।

बीज हमें सिखाता है कि हमें अपने आत्म-नियंत्रण में रहना चाहिए। हमें अपनी इच्छाओं, भावनाओं, और क्रियाओं को संभालकर रखना चाहिए और बुरे या असमय प्रतिक्रियाओं से बचने की कोशिश करनी चाहिए। जैसे बीज अपने स्वाभाविक गुणों का समर्थन करता है और प्रगति करता है, वैसे ही हमें भी अपने स्वाभाविक प्रकृति को पहचानने और उसे सही तरीके से उपयोग करने में समर्थ होना चाहिए। इससे हम अपने जीवन को सफलता, समृद्धि, और खुशियों से भर सकते हैं। बीज का आत्मविश्वास हमें यह भी सिखाता है कि हमें संघर्षों और कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता होनी चाहिए। जैसे कि बीज को धरती के नीचे से उठने के लिए तराई के अभाव में उठना पड़ता है और उसे प्राकृतिक परिस्थितियों से लड़ना पड़ता है, वैसे ही हमें भी अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार होना चाहिए। हमें अपने स्वप्नों और लक्ष्यों के प्राप्ति के लिए संघर्ष करने का साहस रखना चाहिए, चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो।

बीज की संघर्ष की यह उपलब्धि उसके लिए प्रेरणा का स्रोत है जो किसी भी कठिनाई के बावजूद सपनों की उड़ान भरने से नहीं रोक सकता। बीज की अभिलाषा उस उत्कृष्टता को प्रतिबिंबित करती है, जो हमें अपने अंदर से प्रेरित करता है। हम इसे उदाहरण बनाकर अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन कर सकते हैं। अंततः, बीज हमें यह याद दिलाता है कि अगर हम सोच सकते हैं, तो हम कर भी सकते हैं। विश्वास रखने और प्रयास करने से हम सभी अपने सपनों को साकार कर सकते हैं और अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकते हैं। तो चलिए, हम अपनी अभिलाषाओं को पहचानें और अपने सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करें, क्योंकि आखिरकार बीज की अभिलाषा ही हमारे सपनों को उड़ान देने वाली है।

हिम्मत को हार, नाकामी को, स्वीकार तुम नहीं सकते,
असीमित अंतस की शक्ति को, नकार तुम नहीं सकते ।
न सिर्फ एक जीवन हो तुम, कई जीवन के आधार भी हो,
एक बीज की अभिलाषा हो, कभी हार तुम नहीं सकते ॥

श्री यश शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक

क्या दुनिया जीने लायक है ?

क्या दुनिया जीने लायक है ?
कुछ तो सोचा ही होगा संसार बनाने वाले ने,
वरना सोचो ये दुनिया जीने के लायक क्यों होती?

इस दुनिया में इस जीवन को जी लेना एक तपस्या है,
पता नहीं किसने समझाया जीवन एक समस्या है।
संसार बनाने वाला शत्रु नहीं है, साथी है,
जब जब भी तुम हँसते हो उसकी बाहें खिल जाती हैं।
आस को उसने उम्र नहीं दी यह भी एक करिश्मा है,
वरना खुशियों की उम्र भला इतनी उन्नायक क्यों होती?
वरना सोचो ये दुनिया जीने के लायक क्यों होती?

तुम रोज़ सवेरे उठते हो, रोज़ रात को सोते हो,
जब भी कोई मिलता है अपना ही रोना रोते हो।
ये रोना धोना बंद करो कुछ हँसना गाना शुरू करो,
बेशक मरने को आए पर बिना जिये मत मरो।
वरना सोचो ये दुनिया जीने के लायक क्यों होती?
कुछ तो सोचा ही होगा संसार बनाने वाले ने,
वरना सोचो ये दुनिया जीने के लायक क्यों होती?
हम जिसे दुःख कहते हैं वह क्यों कहलाता बेचारा,
इतना शक्तिमय होकर भी क्यों फिरता मारा मारा।
दुःख भी अपने सुख की खातिर आप तलक आ जाता है,
मुझको मेरा सुख दे दो कह कर झोली फैलाता है।

श्रीमती गीता तेवतिया, डी ई ओ

वर्तमान जीवन शैली एवं योग

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मनुष्य विज्ञान की असीम ऊंचाइयों को छू रहा है। अंतरिक्ष में नए-नए तारा-मंडलों में जीवन की संभावनाओं को, वही जमीन को खोदकर बहुमूल्य वस्तुओं के भंडार भर रहा है इसमें कोई संशय नहीं कि एक दिन वह कृत्रिम मन बनाने में भी सफल हो जाएगा। यह सभी प्रगतियां अवश्य ही आश्चर्यचकित कर देने वाली हैं जो कि मानव मस्तिष्क की असीम संभावनाओं को बतलाती है परंतु इस बीच उसने अपने मन और प्राण को अव्यवस्थित कर दिया है। जिसकी वजह से वह विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित हो गया है। इसका कारण एकमात्र ही है - प्रकृति से दूरी। अब चाहे वह दूरी स्व-प्रकृति से हो अथवा आसपास के वातावरण से। जीवन शैली में सुधार कर ही हम इस दूरी को मिटाकर फिर से उस स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन शैली में जीवन के सभी पक्ष सम्मिलित होते हैं यथा - शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवसाय/कार्य के अनुरूप दायित्वों और कर्तव्यों का निर्वहन करता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही आकलन उसकी जीवन शैली के माध्यम से किया जा सकता है। वर्तमान भागदौड़ में मानव इन सभी पक्षों की अनदेखी कर रहा है। कृत्रिमता का जीवन जीते हुए दवाइयों के ऊपर निर्भर होता जा रहा है। मानव सभ्यता की इस अंधी दौड़ में व्यक्ति के पास इतना समय भी नहीं है कि वह एक क्षण रुककर ठीक से श्वास ले सके जोकि जीवंतता का प्रथम लक्षण है। उथली श्वास-प्रश्वास के कारण जीवन भी उथला हो गया है। इस व्यर्थ की दौड़ में बने रहने की आतुरता के कारण शरीर व मन में होने वाली किसी भी व्याधि के उत्पन्न होने पर उन्हें प्राकृतिक रूप से ठीक होने का समय देने के बजाय, आधुनिक दवाइयों का सेवन कर उन्हें दबाना अधिक हितकर समझता है। ऐसा लगातार करते रहने पर एक साधारण सा रोग भी जीर्ण रोग होकर भयानक परिणाम देने वाला हो जाता है।

योग का लक्ष्य व्यक्ति को अशुद्ध मन:स्थिति तथा बिखरी हुई इच्छा की अवस्था से संतुलित इच्छा की ओर ले जाना है। उस अवस्था में इच्छा सकारात्मक, रचनात्मक तथा आत्मोन्नति बन जाती है। वहां वह हमें केवल इन्द्रिय अनुभवों से ही नहीं बांधती और न सिर्फ बाह्य वातावरण तक सीमित रखती है बल्कि हमारे आंतरिक आयाम को भी अपने अंतर्गत समाहित कर लेती है। योग के माध्यम से विभिन्न शारीरिक, मनोशारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक आघातों से उत्पन्न दुखों से स्वयं को बचाया जा सकता है। यदि मनोदशा ठीक न हो तो साधारण सी चोट भी बड़ा घाव बन कर मनुष्य को कष्ट पहुंचाती है। शारीरिक व मानसिक तनावों को साधारण योगाभ्यास से ही छुपे हुए तनावों, वेदनाओं को प्राणायाम, शिथिलीकरण, ध्यान आदि के अभ्यासों से कम किया जा सकता है।

योग सम्यक जीवन का विज्ञान है, अतः इसका समावेश हमारे दैनिक जीवन में एक नियत चर्या के रुप में होना चाहिए। यह हमारे व्यक्तित्व के शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, भावनात्मक, अतीन्द्रिय और आध्यात्मिक सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। योग विज्ञान का प्रभाव व्यक्तित्व के सबसे बाह्य पक्ष - शरीर से प्रारंभ होता है, जो अधिकतर व्यक्तियों के लिए एक व्यावहारिक और सुपरिचित आरंभिक बिंदु है। इस स्तर पर असंतुलन होने से अंगों, पेशियों और तंत्रिकाओं के कार्यकलापों में सामंजस्य नहीं हो पाता है। वे एक-दूसरे के प्रतिकूल कार्य करने लगते हैं। उदाहरणार्थ - अंतः स्रावी प्रणाली के अनियमित होने से तंत्रिका तंत्र की कार्य कुशलता इतनी कम हो जाती है कि रोग होने की संभावना अत्यंत बढ़ जाती है। योग का लक्ष्य शरीर के विविध कार्यकलापों के बीच पूर्ण सामंजस्य स्थापित करना है। योग द्वारा मानव जीवन के सभी पक्ष प्रभावित होते हैं।

योग हमें एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य आध्यात्मिक विरासत के रूप में प्राप्त हुआ है। व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त योग सामाजिक कुरीतियों से भी जूझने की शक्ति प्रदान करता है। ऐसे समय में, जब विश्व पुराने मूल्यों को नए मूल्यों से प्रतिस्थापित किए बिना ही, उन्हें अस्वीकार कर चौराहे पर किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा है,योग लोगों को अपने वास्तविक स्वरूप से जुड़ने का साधन प्रदान करता है। अपने वास्तविक स्वरूप से जुड़कर ही मानव जाति वर्तमान युग में सामंजस्यपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए सक्षम बन सकती है।

श्रीमती नेहा कुमारी कर्ण, डी ई ओ

प्रकृति और हम

इस धरती पर जन्म लिया, इस धरती पर पले बढ़े
इसकी कीमत ना समझी हमने, इसे हमने ही रौंद डाला
हरी भरी जगमग सी धरती,
रंग बिरंगे फूलो से हंसती, सबके दिल को भाती है
क्या इसका ख्याल भी, कोई रख पाता है
इसे अपनी माँ समझ कर, जब हमने नहीं रखा ध्यान
तो क्या ये करेगी, हमारा सम्मान
इस गलतफहमी में, तुम मत रहना
धरती अपना रौद्र रूप दिखलाएगी
कभी सूखा तो कभी बाढ़, कभी भूकंप का मातम रूप दिखाएगी

तो आइए आज हम एक शपथ लें
अपने हर जन्मदिन पर एक पेड़ लगाए
अपनी हर पीढ़ी को ये सीखा पाए
प्रकृति का सम्मान रखेगा, हमारा अभिमान

श्री विजय कुमार, स लेप अधिकारी

आघात

किसी गांव में मीता नामक एक महिला अपने पति मुकेश के साथ रहती थी। मुकेश का परिवार गरीब था लेकिन वह खुद को शराब की लत में डाल दिया था। उसकी पत्नी मीता आवश्यकताओं को समझते हुए अपने पुत्र आर्यन के साथ संतुष्ट जीवन जीने की कोशिश करती थी। लेकिन मुकेश की शराबी आदतें उसके जीवन को अस्थिर बना देती थी। हर दिन वह शराब पीकर घर लौटता तो मीता के साथ बदसलूकी करता और आर्यन को बेहद डांटता था या फिर बिना किसी से संवाद के चुपचाप सो जाता था।

पिता की शराबी आदतों की वजह से घर में अकेलापन, उदासीनता और चिड़चिड़ापन का माहौल रहता। आर्यन के साथी भी उससे ढंग से बात नहीं करते और दूरी बनाने लगे थे। धीरे-धीरे मीता की स्वास्थ्य समस्याएं भी बढ़ने लगी। आर्यन की बचपन की यादें उसके मन में डबकती गई। उसके माता-पिता के बीच के संबंधों की खराबी, आस-पड़ोस, मित्र के बदलते व्यवहार के कारण उसके व्यक्तित्व पर गहरा आघात पड़ा। उसके मानसिकता में भी उसके पिता की आलस्यपूर्ण और नकारात्मक सोच का असर पड़ा।

वह भी गलत संगति में पड़ कर शराब का आदी हो गया। शुरुआत में यह सिर्फ एक दो बार होता था, लेकिन धीरे-धीरे यह उसकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया। शराब की ओर आर्यन की बढ़ती लत को देखकर मां मीता की तबीयत दिन प्रतिदिन और बिगड़ने लगी। मां की तबीयत बिगड़ने से वह बहुत अधिक चिंतित रहने लगा। आस पड़ोस, मित्र सभी ने उसे पैसे देने से मना कर दिए। उसे अपने मां से बहुत लगाव था। अंततः एक दिन आर्यन ने सोचा कि अगर वह चाहे तो परिवार की स्थिति में सुधार ला सकता है और उसने तय किया कि वह इस आदत को त्याग देगा।

आर्यन ने अपनी आदत को छोड़ने के लिए कठिन परिश्रम किया तथा संघर्षशीलता और अदृश्य साहस से उसने अपनी आदत को मात दी। धीरे-धीरे पिता की स्थिति में भी सुधार हुआ। इसके परिणाम स्वरुप उसके परिवार में सब कुछ वापस से सुधरने लगा। उनके बीच संवाद में सुधार हुआ, सहयोगिता बढ़ी और लोग भी इज्जत करने लगे। अब सभी लोग साथ में एक खुशहाल जीवन बिताने लगे थे।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि माता-पिता के स्वभाव का बच्चों पर भी बहुत असर होता है तथा कोई भी व्यक्ति अपने प्रयासों, संघर्षों और सकारात्मक सोच के साथ किसी भी आघात का सामना कर सकता है और अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में मोड़ सकता है।

श्री संजीव चन्द्र पाठक, स लेप अधिकारी

स्वयं पर विश्वास

नहीं हूँ मैं औरो सी तो क्या गम है
समेट ली है ज़िन्दगी की खुशियाँ तमाम ये क्या कम है।
नहीं करनी बातें इधर उधर की
नहीं बनानी है अपनों से दूरियाँ
दुसरों की खुशियों में खुश हैं तो
पराये गम में अपनी आखें नम हैं
फिर भी ये क्या कम है ।
खुद की इच्छाओं को जिंदा रखना मुझे पसंद
अपने आपसे नहीं भूलना ये है मुझे पसंद
नहीं हूँ मैं औरों सी तो क्या गम है ।
कर्त्तव्य की दूरी पर चलते चलते
कुछ वक़्त किताबों को भी देना है
अपने एहसासों को पन्नो
पे उतारना ये भी क्या कम है ।
एक खुशियों की दुनिया बसाई है मैंने
जो नहीं याद करते उन्हें याद भी
दिलाती हूँ मै ये भी क्या कम है ।
दिल में सब के लिए जगह दी है मैंने
नहीं हूँ औरो सी मैं तो क्या गम है ।

सुश्री आद्या, सुपुत्री श्री पंकज कुमार

भागीरथी: जीवनदायिनी-पापनाशिनी

धार्मिक दृष्टिकोण से गंगाजल को अत्यंत पवित्र माना जाता है। पूजा-अर्चना व धार्मिक अनुष्ठानों में गंगाजल अति महत्वपूर्ण है। गंगा, यमुना व सरस्वती तीनों नदियों का संगम है प्रयागराज में जहां कुंभ मेला के समय लाखों लोग संगम में डुबकी लगाते हैं और कृतार्थ समझते हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार नदी के जल में बैक्टीरियाफेन नामक विषाणु होते हैं जो जीवाणुओं वह अन्य हानिकारक सूक्ष्म जीवों को मार देते हैं जिससे नदी का जल पवित्र होता है। जिससे गंगा पूरे विश्व भर में अपने शुद्धीकरण क्षमता के कारण विख्यात है। जल में प्राणवायु ऑक्सीजन की अद्‌वितीय क्षमता है। अभी तो कारण ज्ञात नहीं है। किवदंती अनुसार गंगाजल में रोगों से लड़ने की अद्‌भुत क्षमता है।

आधुनिकीकरण व औद्‌योगिकरण से बढ़ते जल प्रदूषण ने गंगा को भी प्रभावित किया है। जिससे नदी का बायोलॉजिकल ऑक्सीजन स्तर 3 डिग्री से बढ़कर 6 डिग्री हो चुका है। प्रदूषण के कारण जल सिंचाई योग्य भी कम हो रहा है। नदी को प्रदूषण से वंचित रखने के लिए गंगा को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र के सर्वेनुसार गंगा को जलापूर्ति करने वाला हिमनद की समाप्त हो जाने की भी संभावना है।

नदी के जल को पवित्र बनाने हेतु गंगा नामक परियोजना 2014 में आरंभ की गई। जिसके फलस्वरूप गंगा के किनारे बसी सारी औद्‌योगिक परियोजनाओं को बंद करने का आदेश दिया गया। ऋग्वेद, रामायण, महाभारत एवं अन्य पुराणों में गंगा को पुण्य-सलिला, पाप-नाशिनी, मोक्ष-प्रदायिनी, मरावदी कहा गया है। राष्ट्र नदी गंगा जल ही नहीं, अपितु भारत व भारतवासियों की मानवीय चेतना को भी प्रवाहित करती है।

गंगा नदी के साथ कई पौराणिक कथाएं जुड़ी हैं। कथाओं के अनुसार विष्णु के पैर के पसीने की बूंद से ब्रह्मा ने गंगा नदी का निर्माण किया। राजा दिलीप के पुत्र भागीरथ ने ब्रह्मा की घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाया। ब्रह्मा ने प्रसन्नोपरांत गंगा को पृथ्वी पर पाताल में जाने का आदेश दिया। गंगा ने कहा कि इतनी ऊंचाई से पृथ्वी पर अवतरित होऊंगी तो पृथ्वी मेरा वेग सह नहीं पाएगी तदोपरांत भगवान शिव ने अपने जटाओं में गंगा को

समाहित कर एक जटा की एक लट खोल दी जिससे गंगा की अविरल धारा पृथ्वी पर प्रवाहित होने लगी। महाशिव के स्पर्श से गंगा और पावन होकर पृथ्वी वासियों के लिए श्रद्धा तुल्य बन गई व पाताल में भागीरथी व स्वर्ग में मंदाकिनी कहलायी।

गंगा को धार्मिक रूप से देवी के रूप में माना गया है। वाराणसी व हरिद्वार महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल गंगा के किनारे ही अवस्थित है। नदियों में सबसे पवित्र माना गया है व ऐसी मान्यता है कि गंगा में स्नान मात्र से मनुष्यों के सारे पाप धुल जाते हैं जिससे पापनाशिनी भी कहते हैं। मृत्योपरांत अस्थियों को गंगा की पावन धाराओं में प्रवाहित करते हैं और विश्वास करते हैं विसर्जनोपरांत मोक्ष प्रदान करती है गंगा। अतः तट पर मनुष्य नश्वर शरीर को त्याग कर मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं।

गंगा नदी हमारे लिए एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में है। यह हर नदियों से भिन्न है। इसके कई आर्थिक महत्व भी हैं। यह भारत की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है। यदि गंगा न होती तो हमारे देश का एक महत्वपूर्ण भाग बंजर तथा रेगिस्तान होता। इसीलिए गंगा उत्तर भारत की सबसे पवित्र व महत्वपूर्ण नदी है। गंगा का समृद्ध इतिहास, सांस्कृतिक महत्व और पारिस्थितिक महत्व है जो इसे दुनिया की अन्य नदियों से अलग करता है। हिमालय के मनोहर दृश्यों से लेकर डेल्टा तक गंगा नदी सदियों से भारतीय सभ्यता का अभिन्न अंग रही है।

श्री मुकेश अंबानी, डी ई ओ

आलस

वीर तुम अड़े रहो, रजाई में पड़े रहो
ठंड है भाई ठंड है, यह बड़ी प्रचंड है।
कक्ष शीत से भरा है, बर्फ से ढकी धरा है।
यत्न कर संभाल लो, ये समय निकाल लो।
वीर तुम अड़े रहो, रजाई में पड़े रहो।

चाय का मजा रहे, पकौड़े दल सजा रहे।
मुंह कभी थके नहीं, रजाई भी हटे नहीं
लाख मिन्नतें करें, स्नान से बचा रहे।
वीर तुम अड़े रहो, रजाई में पड़े रहो।

एक प्रण किए हुए हैं, कंबलों के लिए हम
तुम निडर डटे रहो, पलंग से हटो नहीं।
मम्मी की लताड़ हो या डैडी की दहाड़ हो
वीर तुम अड़े रहो, रजाई में पड़े रहो।

शब्दों के बाण से, या बेलनों की मार से
पत्नी जी भड़क उठे, या चप्पलें खड़क उठे
लानते हजार हों, धमकियां या प्यार हों
वीर तुम अड़े रहो, रजाई में पड़े रहो।

बधिर बन सुनो नहीं, कर्म से डीगो नहीं
प्रातः हो की रात हो, संग हो न साथ हो
पलंग पर पड़े रहो तुम वहीं डटे रहो।
वीर तुम अड़े रहो, रजाई में पड़े रहो।

श्री अमरेंद्र कुमार चौधरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अपेक्षा

राजाराम में अपनी पत्नी से कहा कि खाना लगा दो, मुझे ऑफिस के लिए देर हो रही है। पत्नी ने कहा 'जी' ठीक है और राजाराम को उसने खाना परोस दिया। वह अभी टेबल पर खाना खाने के लिए बैठा ही था कि तभी फोन की घंटी बज उठी। जब तक उसकी पत्नी फोन उठाती तब तक राजाराम ने खाने से उठकर फोन उठा लिया और पूछा हेलो कौन? उधर से कोई जानी-पहचानी आवाज आई और बस इतना कहा कि 'घर जल्दी चले आओ' तुम्हारे पिताजी की तबीयत बहुत खराब है। इतना सुनना था कि वह थोड़ी देर के लिए खामोश हो गया। पत्नी ने पूछा, क्या बात है? उसने बस इतना कहा कि 'चलने की तैयारी करो'। पति पर 'प्रेम' और 'विश्वास' इतना अटल था उसने 'कब' और 'कहां' पूछने की जरूरत नहीं समझी। वह झटपट तैयार हो गई। कोई मेल नहीं था दोनों में पर न जाने क्यों मतभेद रहने के बावजूद एक दूसरे के प्रति प्रेम में कोई कमी नहीं थी।

राजाराम ने अपने कार्यालय में टेलीफोन के माध्यम से सूचना दे दी कि मुझे अत्यावश्यक कार्य से घर जाना है। उसका बार-बार होने का मन कर रहा था, आंखें नम थी, 'जी' घबरा रहा था और बार-बार यही सोच रहा था कि तबीयत खराब थी तो पिताजी ने फोन क्यों नहीं किया।'मां' तो बचपन में ही गुजर गई थी।

दिल्ली से भागलपुर के लिए सीधे टिकट ना मिलने के कारण राजाराम ने दिल्ली से नौगछिया वाली ट्रेन में रिजर्वेशन कराया। सीट पर बैठते ही वह अपने पिता के साथ बिताए हुए पलों के बारे में सोचने लगा। 'मां' के निधन हो जाने के बावजूद उसके पिता ने लालन-पालन में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। कैसे उसके पिता ने उसे दुनिया की नजरों से बचाए रखा, पढ़ाया-लिखाया और इस काबिल बनाया की वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। समय आया और वह नौकरी करने दिल्ली चला आया। कभी-कभार पिताजी दिल्ली उसके पास आ जाया करते थे, परंतु राजाराम के विवाह के बाद धीरे-धीरे उनका आना बंद हो गया। घर पर छोटी बहन थी जिसकी शादी कुछ साल पहले हो गई थी। बहन के जाने के बाद पिताजी और अकेले हो गए थे। खाना बनाने के लिए नौकर आ जाया करता था। कभी-कभार उनके मित्र भी घर पर आ जाया करते थे। राजाराम की भी विवशता ऐसी रही कि नौकरी के धुन में घर को भूलता चला गया। हम वो कर सकते हैं जो हम चाहते हैं, लेकिन हम वह नहीं चाह सकते जो हमें चाह है। पिताजी की यादें तो थी सीने में, लेकिन वक्त के साथ-साथ वह भी धूमिल होते चले गए। एक कहावत है कि 'नजर से दूर, दिल से दूर' और शायद यही राजाराम पर लागू होता चला गया।

ट्रेन नौगछिया रेलवे स्टेशन पर पहुंची। स्टेशन पर उतर कर राजाराम ने जहाज घाट के लिए ऑटो पकड़ा। जैसे-तैसे वह घाट पर पहुंचा और भागलपुर जाने के लिए जहाज पर सवार हो गया। गंगा अपना

रूप दिखा रही थी और जहाज उस रूप को पीकर हिचकोले खाते हुए आगे बढ़ता चला गया। घाट से उतर कर राजाराम में घर के लिए ऑटो पकड़ा। ऑटो जैसे तैसे तंग गलियों से गुजरते हुए घर के नजदीक पहुंचता गया, पिताजी के साथ बिताए हुए पलों की यादें और ताजा होती गई।

ऑटो जैसे ही घर के दरवाजे के पास पहुंचा तो राजाराम ने देखा कि आंगन में काफी भीड़ थी। राजाराम को कुछ समझ नहीं आ रहा था, उसका दिल और जोरों से धड़क रहा था। जैसे तैसे वह ऑटो से उतरा तो भीड़ ने उसे अंदर जाने का रास्ता दे दिया। घर के आंगन में जैसे ही वह पहुंचा तो आंखों से 'अश्रुधारा' बह निकली। सामने पिताजी का शव पड़ा था, आंखें बंद थी, मानो ऐसा लग रहा था कि पुत्र का इंतजार करते-करते आंखें पथरा गई और थक हार कर पूर्ण विश्राम में चले गए। वह इतने दूर जा चुके थे, जहां से अब वापस लौटकर अपने पुत्र को निहार पाना संभव नहीं था। किसी की कीमत तभी समझ में आती है जब वह दूर हो जाए और कभी मिलने की उम्मीद भी न शेष रहे। 'आडंबर' और 'प्रेम' दोनों एक समान लगते तो हैं लेकिन वास्तव में वह एक होते नहीं। एक का कोई अस्तित्व ही नहीं और दूसरे का अंत नहीं।

"न जीने की ख्वाहिश रही ना मरने का एतवार
जिंदगी बाकी भी है और शेष भी नहीं।
नजरें इनायत तो हैं, लेकिन रहेगा सिर्फ तेरे आने का इंतजार"।

राजाराम जमीन पर धम्म से जा बैठा, उसका कलेजा फट रहा था कि वह अपने पिताजी के अपेक्षा पर खरा नहीं उतर पाया।

श्री शिव शंकर, कनिष्ठ अनुवादक

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष शिविर एक समाजसेवी कार्यक्रम होता है जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना के सदस्य छात्र और छात्राएं (स्वयंसेवक) एक साथ एक विशेष जगह पर मिलकर सेवा कार्य करते हैं। यह विशेष शिविर समय समय पर विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये जाते हैं, जिसमें विशेष ध्येयों को प्राथमिकता देते हुए समाज के विकलांग वर्गों, गांवों, और छोटे नगरों के लोगों के लिए सेवा कार्य किया जाता है। इस शिविर के दौरान सदस्य छात्र और छात्राएं समाज में सभ्यता, सांस्कृतिक ज्ञान, स्वच्छता और हाइजीन जैसे विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता फैलाने के लिए सक्रिय रूप से काम करते हैं। यह विशेष शिविर एक सप्ताह या उससे अधिक की समयावधि का होता है और इसमें सदस्य छात्र और छात्राएं गांवों और छोटे नगरों के समीपी इलाकों के साथ मिलकर समाज के विभिन्न कार्यों में शामिल होते हैं। इन कार्यों में ग्रामीण विकास, स्वच्छता अभियान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, पौधरोपण और विभिन्न समाज सेवा परियोजनाएं शामिल होती हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष शिविर छात्रों को समाज में सेवा के महत्व को समझने, महत्वपूर्ण समाजिक बदलाव को लाने के लिए एक प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करता है और साथ ही छात्रों को नैतिकता, एकता और समाज सेवा के लिए प्रेरित करता है।

आज था विशेष शिविर का प्रथम दिन

दिन रविवार, दिनांक 11 फरवरी और वर्ष 2018 का।

आज हमारे वे सपने साकार होने जा रहे थे, जिनके ख्वाब सभी एन.एस.एस छात्रों को प्रारंभ से ही दिखाया जाता है। न जाने कब से हमारी आखें इसे देखने को और हस्त मानव सेवा में उठने को उत्तेजित हो रही थी। घडी ने साढ़े नौ बजाए और मैं कॉलेज के तरफ चल दिया। वहां पहुंचकर जैसा उमंग आज हमारे साथियों में दिख रहा था, वैसा हमने आज से पहले कभी नहीं देखा। कुछ जरुरी सामान एकत्रित कर हमलोग चल दिए अपने कर्मभूमि की ओर और वह था जिला मुख्यालय मधुबनी से महज 3-4 किलोमीटर दूर, ग्राम- जगतपुर (बरैया टोल)। गावं के मुखिया और हमारे कुछ शिक्षकों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया और हमें हमारे कर्तव्यों का भान कराया। फिर हम सभी स्वयंसेवकों को अलग-अलग दल में बाँट दिया गया। सौभाग्य से मुझे भी एक दल का नेतृत्व करने को मिला। मेरे दल के सभी साथी मेहनती, ऊर्जावान और पूरी तरह से मानव सेवा को समर्पित थे। दल में कुल मिलकर हम सात लोग हुए - शिव शंकर, नवीन, रवि शंकर, अन्नु श्री, शिवानी और माधवी। कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ राहुल मनहर के आदेशानुसार प्रथम दिन हमें ग्राम का दौरा करना था और हमलोग भी इस कार्य के

लिए पूरी तरह तैयार थे। हमारे कदम तेजी से कस्बे की ओर बढ़ रहे थे। अभी हम कस्बे में प्रवेश ही कर रहे थे कि एक आवाज से हमलोग चौंक उठे और उस आवाज ने हमें अपनी ओर आकर्षित किया। सभी लोग चौकन्ना हो गए क्योंकि वह आवाज एक शिशु की रुदन की थी और आसपास कोई भी नजर नहीं आ रहा था। हमलोगों ने तुरंत ही उस आवाज का अनुसरण किया और जो परिणाम सामने आए उससे हमारी आंखें फटी की फटी रह गई। दृश्य था- एक बड़े से वृक्ष से लटकता हुआ साड़ी का झूला और उसमें एक नादान सा छोटा बच्चा।

कहते हैं ना, मां कहीं भी रहे अपने बच्चे की आवाज सुनकर आ ही जाती है और जब वह अपने बच्चे को अनजान लोगों से घिरा देखी तो त्वरित गति से वहां पहुंचकर अपने शिशु को गोद में ले लिया। बच्चे के बारे में पूछने पर पता चला- साहब! हम गरीब लोग हैं, बच्चों को खेलाने और झुलाने के उपकरण बहुत महंगे हैं, इसलिए अपने बच्चे को इसी से दिलासा दे रहें हैं। यह दृश्य अत्यंत मार्मिक और हृदय व्यथित कर देने वाला था। कैसे किसी मां-बाप में गरीब होते हुए भी अपने बच्चों को हर खुशी देने की अभिलाषा होती है।
फिर हमारी नजर एक वृद्ध पर पड़ी, जो जमीन पर एक पेड़ की जड़ में बैठकर बहुत आशा भरी निगाह से हमारी ओर देख रहे था। पूछने पर पता चला कि उसका एक जवान बेटा कुछ दिन पहले ही स्वर्ग सिधार गया है। पूरा परिवार उसी पर निर्भर था, बताते-बताते उनकी आंखें भर आई। पता चला कि परिवार में 11 सदस्य हैं। उन्होंने बताया कि गरीबी की मार ऐसी पड़ी कि उनका 16 साल का बेटा जो अभी पांचवी में ही पढ़ता है, घर के तंग हाल को देखकर काम करने निकल गया है। वह राजमिस्त्री का काम करता है और पूरे परिवार का निवाला पूरा करता है। क्योंकि वह एक प्रशिक्षित मिस्त्री नहीं है उसे रोज काम भी नहीं मिलता। जैसे-तैसे परिवार के दिन कट रहे हैं। इन्हें तो अपने कपड़े भी तालाब में साफ करना पड़ता है। ये लोग तो रोज शाम का दीपक जलाते हैं पर पता नहीं इनके परिवार के दीपक कब जलेंगे। इतनी मुसीबतों के बाद भी ये लोग संयुक्त परिवार ही हैं। इनके अच्छे दिन न जाने कब आएंगे।

भ्रमण के दौरान फिर हम मिले एक ईंट के घर वाले से और अगल-बगल से पता चला कि इनके बेटे नौकरी में हैं। घर में सिर्फ वृद्ध दंपत्ति हैं। एक पंडित कुशेश्वर झा और दूसरी उनकी धर्मपत्नी। इनके घर में सारी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध थी। चापाकल भी था, शौचालय भी थे और रहने को पक्के का मकान भी थे लेकिन रहने वाला ही कोई नहीं था। इनसे पूछने पर पता चला इनके दो बेटे हैं और दोनों प्राइवेट जॉब में बाहर हैं। मां-बाप के लिए कोई भी समय नहीं निकाल पता है। पर्व-त्योहार पर ही वे लोग घर आते हैं। इसी क्रम में हम जहां पहुंचे वह घर था शुभकला देवी का। गरीबी तो जैसे कुंडली मारकर इनके घर में बैठा था। बाढ़ ने इन लोगों पर ऐसा कहर बरसाया कि सारी फसल बर्बाद हो गयी । इन पर तो मानो विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा क्योंकि इनका पूरा परिवार कृषि पर ही निर्भर है। पूछने पर बताई कि इतना उपजा लेते हैं कि खुद का गुजारा हो सके। नहीं उपजाएंगे तो खाएंगे क्या? यह अधिकतर बीमार ही रहती है।

हमारी टीम अभी पूछताछ कर ही रही थी कि मेरी नजर एक लड़की पर पड़ी जो घरेलू कामकाज कर रही थी। अपने साथी से पता चला कि इनका नाम कविता कुमारी है और वह मैट्रिक पास होते-होते

चूक गई क्योंकि इन्हें गणित पढ़ाने वाला कोई नहीं मिला। फलस्वरूप गणित में कम अंक मिला और इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। हमारी ओर से पूछा गया कि पढ़ने में रुचि है? उत्तर मिला हां है, लेकिन हमारे गांव में कोई उच्च विद्यालय नहीं है। पढ़ने के लिए शहर के सूरी हाई स्कूल जाना पड़ता और रोज जाना संभव नहीं है। हमने कविता जी को कड़ी मेहनत कर दसवीं उत्तीर्ण करने की सलाह दी और पढ़ाई का महत्व बताया। साथ ही बाल-विवाह और दहेज को रोकने की भी बात कही।

हम लोग इस गांव के लिए किसी अजनबी से कम नहीं थे। जहां भी जाते बच्चों का हुजूम जमा हो जाता। हमारी नजर एक नन्हीं बालिका पर पड़ी, जिसके एक हाथ में खुरपी और दूसरे हाथ में घास थे। हम लोग उसकी तरफ बढ़ ही रहे थे कि किसी अनजान भय से वह बच्ची भाग गई। लोगों ने बताया कि इस नन्हीं बालिका का नाम मुन्नी कुमारी है जो महज 4 साल की ही है लेकिन बहुत काम करती है। सभी लोग ने तो यह बात बहुत खुशी से बताया लेकिन जब हमने पूछा कि इसे जीवन भर घास ही काटना है क्या? क्या यह बच्ची हमारे साथी और इंदिरा गांधी की तरह नेतृत्व नहीं कर सकती? सभी लोग सन्न थे, हमने उन्हें महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, दहेज प्रथा आदि के बारे में समझाया तो उन्होंने बोला कि मैं भी अपनी बेटी को स्कूल भेजूंगी।

कुछ महिलाओं ने बताया कि वे लोग कई महीनों से रसोई गैस के लिए दफ्तर का चक्कर लगा रही है। हमने उन्हें संगठित होकर आवाज उठाने की सलाह दी। बात-बात में ही पता चला कि कक्षा 8 तक की पढ़ाई गांव के स्कूल में हो जाती है परन्तु कक्षा 8 तक की इस स्कूल में अपर्याप्त शिक्षक हैं। घड़ी ने 2:45 बजा दिए थे। हमारे कार्यक्रम पदाधिकारी ने हमें लौटने का आदेश दिया। हम लोग नाश्ता किए और घर की ओर रुख किया, पर कुछ सवाल से हमारे कदम भारी होते जा रहे थे। क्या यही है हमारे नए भारत का सपना? क्या इसी तरह से हमारा देश होगा विकसित? क्या सरकार का स्वच्छता अभियान और शौचालय योजना बस कागजी लेख बनकर रह जाएगा और न जाने क्या क्या?

लेकिन साथ ही नई उमंग भी थी कि हम बदलेंगे इनके हाल, हम करेंगे इन्हें जागरूक, खुद के हक के लिए आवाज उठाना सिखाएंगे। आज इनकी सेवा करके जो खुशी मिली वैसी खुशी न तो आज तक किसी शादी में जाकर, न तो बर्थडे पार्टी में जाकर और न ही किसी मंदिर में मिली थी। मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है और यही हमारा उद्देश्य भी होना चाहिए।

श्री मुकेश अंबानी, डी ई ओ

पिता

पिता एक उम्मीद है एक आस है।
परिवार की हिम्मत और विश्वास है।
बाहर से सख्त और अंदर से नरम है
उसके दिल में दफन कई मर्म है।
पिता संघर्ष की हौसलों की दीवार है।
परेशानियों से लड़ने की दो धारी तलवार है।
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है।
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है
पिता जिम्मेदारियों से लदी गाड़ी का सारथी है।
सबको बराबरी का हक दिलाता यही एक महारथी है
सपनों को पूरा करने में लगाने वाली जान है
इसी से तो मां और बच्चों की पहचान है।
पिता जमीर है पिता जागीर है।
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है।
कहने को सब ऊपर वाला देता है।
पर खुदा का ही एक रूप पिता का स्वरूप है।

अंतर कार्यालयीन हिंदी प्रतियोगिता के परिणाम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2) के तत्वाधान में संयुक्त हिंदी दिवस के अवसर पर अक्टूबर-नवम्बर 2022 के दौरान विभिन्न सदस्य-कार्यालयों की ओर से आयोजित अंतर कार्यालयीन हिंदी प्रतियोगिताओं के तीनों कार्यालयों के विजेता निम्न हैं:

क्रम स.	पुरस्कार विजेता का नाम पदनाम व कार्यालय (श्री/ सुश्री)	प्राप्त पुरस्कार	प्रतियोगिता का नाम
1.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रथम	राजभाषा लिखित प्रश्नोत्तरी
2.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रथम	समाचार पठन
3.	माशूकी अख्तर,कनिष्ठ अनुवादक प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-I)	प्रथम	विविधा
4.	कुणाल आशीष, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	द्वितीय	हिंदी अनुवाद
5.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रोत्साहन पुरस्कार-I	गुमनाम स्वतंत्रता संग्राम योद्धा पर एक वक्तव्य
6.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रोत्साहन पुरस्कार-I	विविधा
7.	साई कृपा नाल्कुर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रोत्साहन पुरस्कार-I	राजभाषा लिखित प्रश्नोत्तरी
8.	साई कृपा नाल्कुर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रोत्साहन पुरस्कार-II	हिंदी अनुवाद

9.	अनूप कुमार, लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रोत्साहन पुरस्कार-III	राजभाषा लिखित प्रश्नोत्तरी
10.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रोत्साहन पुरस्कार-III	सामान्य ज्ञान लिखित प्रश्नोत्तरी
11.	विश्वनाथ बी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रोत्साहन पुरस्कार-III	निबंध लेखन
12.	शोभा जी वारियर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय	प्रोत्साहन पुरस्कार-III	समाचार पठन
13.	महेश एम, लेखापरीक्षक प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय	प्रोत्साहन पुरस्कार-IV	गायन (युगल)
14.	हेना टी एस, पर्यवेक्षक प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II)	प्रोत्साहन पुरस्कार-IV	गायन (युगल)

नराकास (का-2) द्वारा अक्टूबर-नवंबर,2022 में आयोजित अंतर-कार्यालयीन प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागी

स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर उपस्थित ऑडिट परिवार

अखिल भारतीय लोक सेवा (संगीत,नृत्य, लघु-नाटिका प्रतियोगिता- 2022-23) में हमारे कार्यालय का प्रतिनिधित्व

कार्यालय में ओणम त्योहार का आयोजन

रक्तदान शिविर के दौरान प्रमाण पत्र का वितरण करती प्रधान महालेखाकार महोदया

कार्यालय प्रांगण में आयोजित चिकित्सा शिविर

भा. ले. एवं ले.प. वि. साउथ जोन क्रिकेट टूर्नामेंट 2022-23 की झलकियां

ऑडिट माह, नवंबर 2022 में आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीमें

TEAM
SUNIL
JOSHI

TEAM
SOURAV
GANGULY

हिंदी पखवाड़ा 2022 का शुभारंभ

मंच संचालन करती कनिष्ठ अनुवादक सुश्री माशुकी अख्तर एवं सुश्री सोनाक्षी सक्सेना

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान "यमराज से मुलाकात" विषय पर लघु नाटिका का मंचन

प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा पुरस्कार वितरण

निदेशक,(प्रशासन)/ प्र.नि.ले.प.(कें) से पुरस्कार ग्रहण करते विजेता

विजेताओं को सम्मानित करते वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)/ले.प.-II

समूह गायन द्वारा हिंदी का महत्व बताते कार्मिक

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करती कनिष्ठ अनुवादक सुश्री नुपुर कुमारी

संयुक्त राजभाषा परिवार